अणुविभा

वर्ष 25 | अंक 1 | अगस्त, 2023

ISSN No. 2582-4546

₹ 30

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

क्या आप जानते हो ?

भारतीय स्वतन्त्रता दिवस से एक दिन पहले 14 अगस्त 1947 को पाकिस्तान ने अपना स्वतन्त्रता दिवस मनाया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि अविभाजित भारत के अन्तिम वायसराय लॉर्ड माउंटबेटन को दोनों देशों के स्वतन्त्रता दिवस समारोह में शामिल होना था।

हमारा राष्ट्रीय ध्वज पूरी तरह से हाथ से काती गई और हाथ से बुनी गई सूती खादी से बनाया जाता है। ध्वज के निर्माण का अधिकार केवल खादी विकास और ग्रामोद्योग आयोग के पास है। कर्नाटक के धारवाड़ में स्थित कर्नाटक खादी ग्रामोद्योग संयुक्त संघ (केकेजीएसएस) ये झंडे बनाता है।

15 अगस्त 1947 को देश की आजादी के उत्सव में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी शामिल नहीं हो पाए थे, क्योंकि वे उस समय कोलकाता में थे और हिंदु–मुस्लिम दंगों को रोकने के लिए अनशन (उपवास) पर थे।

15 अगस्त तक भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा रेखा निर्धारित नहीं थी। यह 17 अगस्त को 'रेडक्लिफ लाइन' के रूप में खींची गई। भारत ने स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद 560 रियासतों को भारतीय संघ में शामिल किया था जिनमें हैदराबाद सबसे आखिर में भारत का हिस्सा बना था।

कहाँ क्या?

आलेख

विक्रम साराभाई	: सुशीला शर्मा	– 11
राष्ट्रीय समर स्मारक	: प्रभा पारीक	– 14
सूचना का अधिकार	: सुधा रानी तेलंग	– 28
मेरा देश : गाँव विशेष	: शिखर चन्द जैन	– 34
पानी में खेल का रोमांच	: अनिल जायसवाल	– 37
कौन थी मोनालिसा	: डॉ. विनोद गुप्ता	– 38
राज्य पक्षी : राज धनेश	: डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी	– 47

कहानी

बचाया भँवर जाल से	: रजनीकान्त शुक्ल	– 07
तिनके वाला चोर नहीं	: गोविन्द शर्मा	– 09
आजादी का उल्लास	: ललित शौर्य	– 15
गोलू बन्दर	: उमेशकुमार चौरसिया	– 19
आँखों ने कहीं अपनी कहानी	: डॉ. राकेश कुमार चक्र	– 23
फूलपुर का आर्केस्ट्रा	: समीर गांगुली	– 31
सूअरु ने खेली गेंद	: राजीव ताम्बे, विशाखा ठाकूर	– 35
देशभक्ति की परिभाषा	: अर्चना त्यागी	– 39

कविता-गीत

प्यारे सच्चे घर	: प्रभुदयाल श्रीवास्तव	– 06
लिए हाथ में चलें तिरंगा	: धीरेन्द्र द्विवेदी	– 10
आजादी का पर्व मनाएँ	: मंगल कुमार जैन	– 10
तिरंगा लहराएँ	: हरप्रसाद रोशन	– 10
रानू बोला	: अंजीव अंजुम	– 18
तब होगी सच्ची आजादी	: प्रकाश मनु	– 18
सुखदायक जीवन	: विनय बंसल	– 24
रक्षाबंधन का त्यौहार	: गीता गुप्ता 'मन'	– 30
रक्षाबंधन	: डॉ. अवधेश कुमार अवध	– 30
मत बाँटो इनसान को	: विनय महाजन	– 47

विविधा

रंग भरो	: चाँद मोहम्मद घोसी	– 13	दिमागी कसरत	: प्रकाश तातेड़	– 20
वर्ग पहेली	: राधा पालीवाल	– 17	बूझो तो जानें	: शशि बाला श्रीवास्तव	– 25
विस्मयकारी भारत	: रवि लायटू	– 22	चित्र कथा	: संकेत गोस्वामी	– 48

स्तम्भ

सम्पादक की पाती – 05, महाप्रज्ञ की कथाएँ – 06, जीवन विज्ञान के प्रयोग – 08, दस सवाल : दस जवाब, जरा हँस लो,–21, प्रेरक वचन–24, आओ पढ़ें : नई किताबें – 25, ओल्ड इज गोल्ड – 26, पेन्सिल आर्ट वर्क – 29, अन्तर ढूँढ़िये – 30, सुडोकू–32, व्हाट्सएप कहानी– 33, पढ़ो और जानो, उत्तरमाला– 41, कलम और कूँची– 42, नन्हा अखबार – 44, बाल कलम – 46, किड्स कॉर्नर– 49,

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष : 25 अंक : 1 अगस्त, 2023

प्रकाशक
अणुव्रत विश्व भारती
सहयोगी संस्थान
भागीरथी सेवा प्रन्यास

सम्पादक | संचय जैन 98290 52452
सह सम्पादक | प्रकाश तातेड़ 93515 52651
प्रबन्ध सम्पादक | निर्मल राँका, पंचशील जैन
कार्यालय | चन्द्रशेखर देराश्री
ग्राफिक डिजायन | गजेन्द्र दाहिमा
चित्रांकन | सुशील कुमार, दीपिका शर्मा

अध्यक्ष | अविनाश नाहर
महामन्त्री | भीखम सुराणा
कोषाध्यक्ष | राकेश बरड़िया
प्रकाशन मन्त्री | देवेन्द्र डागलिया
संयोजक, पत्रिका प्रसार | सुरेन्द्र नाहटा

सम्पादकीय कार्यालय

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
9414343100

सदस्यता शुल्क

वार्षिक	: 350 रु.
त्रैवार्षिक	: 900 रु.
पंचवार्षिक	: 1500 रु.
दस वर्ष	: 3000 रु.
पंद्रह वर्ष	: 7500 रु.

(कोरियर द्वारा 300 रु अतिरिक्त प्रतिवर्ष)
विदेश के लिए वार्षिक शुल्क $ 20

प्रकाशक मुद्रक व सम्पादक

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कोलोनी, उदयपुर (राज.) के लिए चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. उदयपुर से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित
ISSN No. 2582-4546

सदस्यता शुल्क भेजने के तीन तरीके -

नकद / चैक / ऑनलाइन	UPI	RAZOR PAY
ANUVRAT VISHWA BHARTI SOCIETY IDBI Bank BRANCH Rajsamand A/c No. : 104104000046914 IFSC : IBKL0000104		https://rzp.io/l/uGTBPsrRx

Send Payment Information On Whatsapp No. 9116634513

'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है। समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

www.anuvibha.org www.bachchonkadesh.com www.facebook.com/bkdpage

सम्पादक की पाती

प्यारे बच्चो,

आपकी प्यारी और पसन्दीदा पत्रिका 'बच्चों का देश' का यह अंक आपके हाथों में पहुँचाते हुए अतिरिक्त ख़ुशी का अनुभव हो रहा है। इसकी वजह भी विशेष है– **'बच्चों का देश' पत्रिका का अपने 25वें वर्ष में प्रवेश।** 15 अगस्त 1999 को पत्रिका का प्रथम अंक यानी प्रवेशांक प्रकाशित हुआ था। तब से आज तक आपकी यह पसन्दीदा पत्रिका अपने मूल सिद्धान्तों पर कायम रहते हुए आपके जीवन को ख़ूबसूरत बनाने के लिए प्रयासशील रही है। क्या आप जानना चाहेंगे कि क्या हैं इस पत्रिका के मूल सिद्धान्त! आइए, जानते हैं –

- ❑ बच्चों के मनोविज्ञान को समझते हुए उसी अनुरूप सामग्री प्रकाशित करना
- ❑ उपदेशात्मक भाषा से बचना और सहज–सरल भाषा में बच्चों से संवाद कायम करना
- ❑ हिंसा, आक्रोश जैसी नकारात्मक भावनाओं को उभारने वाले साहित्य को प्रकाशित न करना।
- ❑ भाषागत शुद्धता को गम्भीरता के साथ सुनिश्चित करना
- ❑ बालमन के अनुरूप रंग–बिरंगे चित्रों व साज–सज्जा को प्राथमिकता देना

आज जब राष्ट्रीय स्तर पर वर्षों से प्रकाशित हो रही प्रसिद्ध व लोकप्रिय बाल–पत्रिकाएँ बन्द हो गई हैं, 'बच्चों का देश' का 25वें वर्ष में प्रवेश एक बड़ी उपलब्धि कहा जा सकता है। यह आप बाल पाठकों के प्यार, विद्वान लेखकों के सहयोग और शुभचिंतकों के स्नेह से ही सम्भव हो सका है। 'बच्चों का देश' ने अपने प्रारम्भिक दो दशक का सफर 'भागीरथी सेवा प्रन्यास' के साथ पूरा किया और उसके बाद अणुव्रत विश्व भारती का अभिन्न अंग बनकर अपनी यात्रा को गति प्रदान कर रही है। इस अवसर पर 'बच्चों का देश' के जन्मदाता, प्रेरणास्रोत और संरक्षक श्रद्धेय मोहन दादा की याद भाव–विह्वल कर रही है जिन्होंने बाल–भगवान को अपना जीवन समर्पित कर दिया था। पत्रिका की प्रथम सम्पादक कल्पना दीदी ने 15 वर्षों तक इसे अँगुली पकड़ कर आगे बढ़ाया और चलना सिखाया। नमन!

अणुव्रत आन्दोलन के अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण का आशीर्वाद पत्रिका की ताकत है, प्रतिमाह जिनके हाथों में पहुँच कर यह पत्रिका कृतार्थता का अनुभव करती है। अणुविभा के अध्यक्ष सहित सम्पूर्ण टीम का अनन्य सहयोग, देशभर में फैली अणुव्रत समितियों का नेटवर्क और पत्रिका के सम्पादन व प्रकाशन से जुड़ी समर्पित टीम इस पत्रिका की सफलता का आधार है। आने वाले 25 वर्ष 'बच्चों का देश' की सफलता में चार चाँद लगाने वाले हों और अपने बाल–पाठकों के जीवन को सँवारने में यह पत्रिका योगभूत बनती रहे, इसी आशा, विश्वास और कामना के साथ आप सभी को बधाई।

आपका ही,
संचय

दोनों चाहिये

दो आदमी नदी के तट पर पहुँचे। उन्हें नदी पार करनी थी उन्होंने देखा–नौका पड़ी है। एक बोला– ''नाविक तो नहीं है पर नौका पड़ी है। नदी पार कर लेंगे।'' दूसरा बोला– ''ऐसा नहीं हो सकता। नदी को पार करने के लिए केवल नौका ही पर्याप्त नहीं है। नाविक भी चाहिए, पतवार भी चाहिए। नौका को खेने की कला भी चाहिए। यह सब हो तब नदी को पार किया जा सकता है।''

पहला बोला– ''यह कैसे हो सकता है ? जीवन भर सुनते आए हैं कि नदी को पार करना हो तो नौका से उसे पार कर लो। नौका पड़ी है। क्या आवश्यकता है दूसरी चीजों की?'' दूसरे ने समझाया, पर वह नहीं माना। उसने नौका को खोला। अकेला ही उसमें बैठ गया। पानी की एक हिलोर आयी और नौका आगे बहने लगी। पानी का बहाव तेज था, धारा तेज थी। नौका डगमगाने लगी। कुछ दूर जाकर नौका उलट गयी। यात्री पानी में डूब गया।

कथा बोध : जो व्यक्ति एक अंश को पकड़ता है, शेष की उपेक्षा करता है, उसके लिए तैराने वाली वस्तु भी डुबोने वाली हो जाती है। वास्तव में तैराने वाला और डुबोने वाला दो नहीं होते, एक ही होते हैं। जो तैराने वाला है वही डुबोने वाला है और जो डुबोने वाला है वही तैराने वाला है।

पद्य कथा

प्यारे सच्चे घर

बहुत दिनों के बाद शाम को,
माँ ने घर का ताला खोला।

कुतर–कुतर कर खाने वाले,
चूहे अपने बिल में भागे।
तिलचट्टों ने दौड़ लगा दी,
जैसे ही सोते से जागे।
एक छछूंदर ने अलमारी,
के नीचे स्थान टटोला।...

मकड़ी को आभास हुआ कुछ,
दुबक गई अपने जाले में।
छिपकलियाँ भी दौड़ लगाकर,
जा बैठीं पीछे आले में।
एक गिरगिट ने घात लगाकर,
टिड्डी दल पर हमला बोला।...

कई दिनों के बाद खुला तो,
कुत्तों ने दरवाजा सूँघा।

बछड़े ने रोटी की आशा,
को लेकर चौखट को चूमा।
लिए कमंडल साधू बाबा,
फिर से बोला बम–बम भोला।..

खुले हुए दरवाजे वाले,
घर सच में ही अच्छे लगते।
भीतर बच्चे खेल रहे हों,
वे घर प्यारे सच्चे लगते।
घर के भीतर की रसोई से,
महकें मटर टमाटर छोला।...

प्रभुदयाल श्रीवास्तव
छिंदवाड़ा (मध्य प्रदेश)

बचाया भँवर जाल से

ओड़िसा में जाजपुर जिला मुख्यालय से दक्षिण की ओर सत्ताइस किलोमीटर की दूरी पर बारो तहसील में अंगालो नाम का एक गाँव है। 29 मई 2003 को खरस्त्रोता नदी के बगमारा घाट पर इसी गाँव के असित रंजन सामल व पड़ोसी श्रीदेवी प्रसन्ना और अमित सुबह–सुबह नहाने के लिए गये।

घाट पर पहुँचकर उन्होंने देखा कि उनकी ही तरह कुछ लोग और भी थे जो नहाने के लिए आए हुए थे। उन्होंने अपने कपड़े किनारे पर एक ओर रखे और धीरे से नदी के पानी में उतर गए। वे तीनों नदी के पानी में नहाने लगे। श्रीदेवी प्रसन्ना नहाते–नहाते पानी में थोड़ा अन्दर की ओर चला गया तो बहाव में उसके पैर स्थिर न रह सके और वह निराधार होकर पानी के साथ–साथ बहने लगा। उसे इस तरह बहते देख अमित उसे बचाने के लिए आगे बढ़ा तो वह भी उसके साथ–साथ बहने लगा।

जब वे दोनों इस तरह तेजी से बहने लगे और बचाव के लिए चिल्लाने लगे तब असित कुमार किनारे के पास था और उसका मुँह भी उस समय नदी से उल्टी दिशा में। जब उसने अपने पीछे शोरगुल की ये आवाजें सुनी तो पलटकर देखा।

''अरे, वे दोनों तो खतरे में हैं। उन्हें बचाना होगा।'' मन में ऐसा सोचकर असित तेजी से उनकी ओर तैरता हुआ जाने लगा। नदी के बहाव के साथ बहते हुए वे दोनों इस बीच काफी आगे तक जा चुके थे। इसलिए अब असित को तेजी दिखाते हुए उनके करीब पहुँचना था और बचाकर निकाल लाना था। यही सोचकर वह तेजी के साथ तैरता हुआ उन तक जा पहुँचा। मगर जब तक असित उन दोनों के पास पहुँचा वे दोनों ही नदी के पानी में बन रहे एक भँवर के जाल में फँस चुके थे। वे आगे जाने की बजाय वहीं एक गोल बड़े से घेरे में घूमने लगे थे।

देखें पृष्ठ 13...

स्वच्छता का विवेक

जीवन विज्ञान के प्रयोग

घर की सफाई

अपने कमरे को साफ–सुथरा रखना प्रत्येक बालक का कर्त्तव्य है। अपने पढ़ने, बैठने और सोने का स्थान साफ रखें। पुस्तकें, कॉपियाँ इधर–उधर बिखरी हुई न हों। कागज के टुकड़े, पेंसिल के छिलके व अन्य कचरे को कचरेदान में डालें। कमरे की खिड़कियाँ खुली रखें जिससे सूर्य की किरणें और ताजी, स्वच्छ वायु कमरे में आ सके। कमरे में मक्खी–मच्छर, मकड़ी के जाले आदि पनपने न दें।

पीने का पानी

पीने का जल घड़ों अथवा टोंटी वाले पात्रों में शुद्ध और स्वच्छ स्थान पर रखें। जल के पात्र को हमेशा ढककर रखें। जल निकालने के लिए लम्बी डंडी वाले लोटे का प्रयोग करें। पीने का पात्र अलग से रखें। जल पीने के बाद जूठे गिलास को घड़े पर न रखें।

भोजन

बाजार में बिकने वाली शाक–सब्जियाँ, फल, दालें, अनाज, मसाले आदि कीटनाशकों के छिड़काव वाली होती है। अतः इनको खाने अथवा पकाने से पहले भली–भाँति धो लेना चाहिए। भोजन को सफाई से पकाना चाहिए। पके हुए भोजन को ढककर रखना चाहिए। भोजन पकाने और खाने के बरतन बिलकुल साफ होने चाहिए। रसोई का कचरा–पात्र ढका हुआ होना चाहिए। रसोई की सफाई का विशेष ध्यान रखें। भोजन उतना ही करें जितनी भूख हो। थाली में अधिक भोजन लेना अथवा जूठा छोड़ना दोनों ही गलत आदत है। यदि कभी थाली में भोजन–सामग्री बच जाए तो उसे कचरे के पात्र में डालें, नाली में नहीं बहाएँ।

विद्यालय की सफ़ाई

विद्यालय की सफाई करने वाले कर्मचारी का आदर करें। यदि आवश्यक हो तो उसे उसके कर्त्तव्य निभाने में सहयोग करें। अपनी कक्षा की सफाई पर विशेष ध्यान दें। अपनी ओर से कक्षा में बिलकुल गन्दगी न फैलाएँ। सहपाठियों को भी गन्दगी फैलाने से रोकें। पानी पीने के स्थान, मूत्रालय व शौचालय की सफाई हमेशा बनाए रखें। यदि सफाई नहीं है तो इसके बारे में कक्षा–अध्यापक अथवा संस्था प्रधान को बताएँ। खेल के मैदान में कागज, प्लास्टिक की थैलियाँ अथवा बची हुई भोजन–सामग्री नहीं फेंकें। कागज अथवा प्लास्टिक की थैलियाँ कूड़ेदान में डालें। विद्यालय की दीवारों पर न लिखें।

तिनके वाला चोर नहीं

राजा के महल में चोरी हो गई। चोरी भी उस कक्ष में जिसमें बाहर से कोई जा ही नहीं सकता। इसलिए यह माना गया कि चोरी महल के किसी नौकर ने ही की है। किसने? यह पता लगाने के लिए भाग दौड़ शुरू हो गई। पता लगा कि चोरी दिन में दो से पाँच बजे के बीच हुई थी। दो को छोड़कर सभी नौकरों की पक्की खबर मिल गई कि वे दो से पाँच बजे के बीच कहाँ थे और क्या कर रहे थे ? दो नौकर कालू और मालू अभी राजा और मन्त्री के सामने पेश नहीं हुए थे। उन्हें बुलाया गया।

दोनों नौकर महल के अस्तबल* में मिले। राजा और मन्त्री के सामने दोनों पेश हुए। कालू अभी हाथ जोड़े खड़ा ही था कि मालू बोलने लगा– ''दो से पाँच के बीच अस्तबल में मैं अकेला ही था। मैंने चारा तैयार किया और घोड़ों को खाने के लिए दिया।'' यही बात कालू ने कही – ''वह अकेला ही अस्तबल में था। यह मालू तो अभी कुछ देर पहले ही आया था।''

मन्त्री ने राजा से कहा– ''इन दोनों में से कोई एक झूठ बोल रहा है। जाहिर है जो झूठ बोल रहा है वही चोर है। अब हमें चोर तक पहुँचने में ज्यादा देर नहीं लगेगी। पर दो से पाँच तक अकेला ही अस्तबल में कौन था? कालू या मालू? यह किससे पूछें? घोड़े तो गवाही दे नहीं सकते।'' मालू बीच में ही बोल पड़ा– ''हुजूर आप भी? वैसा ही करिए, जैसा बादशाह अकबर के वजीर बीरबल ने किया था। बीरबल ने कहा था कि चोर की दाढ़ी में तिनका होता है। आप हम दोनों की तलाशी लीजिए। देखें, दाढ़ी में तिनके वाला चोर कौन है?''

मन्त्री ने कहा– ''हाँ! यह भी एक सही तरीका है। इधर आओ मालू, पहले तुम्हारी तलाशी लेता हूँ।'' मालू खुशी–खुशी आगे आया। मन्त्री ने उसकी दाढ़ी और कपड़ों की तलाशी ली। कहीं से भी एक तिनका नहीं मिला। उसको वापस उसकी जगह भेज कर कालू को आगे बुलाया गया। कालू डरता डरता आगे आया। मन्त्री ने उसकी तलाशी ली तो उसकी दाढ़ी में, उसके सिर के बालों में तथा पहने हुए कपड़ों में कितने ही तिनके मिले। मन्त्री ने उसे वापस उसकी जगह भेजते हुए कहा– ''महाराज, चोर पकड़ा गया।''

महाराज बोले– ''मैं समझ गया कि यह कालू ही चोर है। इसके सिर के बालों और कपड़ों में से कितने ही तिनके मिले हैं। इसलिए यही चोर है। इतने तिनके मिले हैं, इसलिए एक नहीं इसने और भी कई चोरियाँ की है। इससे माल वसूल कर इसे जेल में डाल दिया जाए।'' किन्तु मन्त्री ने सब ओर नजर दौड़ाई और कहा– ''नहीं महाराज, कालू चोर नहीं है। कालू के शरीर से तिनके मिले हैं, इससे यही साबित होता है कि यह अस्तबल में था। वहाँ इसने घोड़ों का चारा

देखें पृष्ठ 12...

*अस्तबल = घोड़ों को रखने की जगह

लिए हाथ में चलें तिरंगा

लिए हाथ में चले तिरंगा
गाते हैं हम शान से।
भारत माँ का जयकारा हम
करते हैं सम्मान से।
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्।।

भाँति–भाँति के लोग यहाँ पर
रहन–सहन औ' बोलियाँ।
मातृभूमि की खातिर सबने
खाईं अनगिन गोलियाँ।

उन वीरों को नमन करें हम,
श्रद्धा सँग अभिमान से।...

चन्दा मामा तक पहुँचे हम
मंगल पर जल खोजते।
अग्नि लक्ष्य आकाश मिसाइल
नित्य नये पथ शोधते।

विज्ञानी वीरों की गाथा
जुड़ी देश उत्थान से।...

खेतों में जिसने भी अपने
रोपे आशा बीज हैं।
खेतों में ही जिनकी होली
दीवाली औ' तीज हैं।

भूमि सुतों का वन्दन करते
उनके गौरव गान से।...
वन्दे मातरम् वन्दे मातरम्।।

धीरेन्द्र द्विवेदी
बभनियाँव देवरिया (उत्तर प्रदेश)

आजादी का पर्व मनाएँ

आजादी का पर्व मनाएँ।
एकता का भाव अपनाएँ।
तिरंगा झंडा फहराकर,
सभी खुशी से नाचे गाएँ।।

देशवासी मिल गीत गाएँ।
सबका सुर से सुर मिल जाएँ।
वैर विरोध को भूलकर हम,
सभी देश पर मर मिट जाएँ।।

राष्ट्र सेवा का भाव लाएँ।
समरसता की कसमें खाएँ।
वीरता के भाव अपनाकर,
देश के लिए हम लड़ जाएँ।।

आओ, मंगल गीत सुनाएँ।
ढोल–नगाड़े, संगीत बजाएँ।
स्वतन्त्रता का जोश बताकर,
आजादी की धूम मचाएँ।।

उत्साहित हो खुशी जताएँ।
देशभक्ति की लगन लगाएँ।।
श्रद्धा भाव का दीप जलाकर,
शहीदों को सब पुष्प चढ़ाएँ।।

मंगल कुमार जैन
उदयपुर (राजस्थान)

तिरंगा लहराएँ

वर्षा है, अब हरियाली है,
आजादी की खुशहाली है।
देश प्रेम के गीत सुनाएँ,
चलो तिरंगा हम लहराएँ।

अगस्त माह अब आया है,
स्वतन्त्रता दिवस लाया है।
याद शहीदों की आती है,
ऊर्जा नवीन दे जाती है।

रिमझिम–रिमझिम वर्षा होती,
धरती पर हरियाली बोती।
धरती माता खिल–खिल जाती,
बच्चों पर वह नेह लुटाती।

खुशबू उड़ती है फूलों में,
बचपन झूले नित झूलों में।
सुन्दर सबसे देश हमारा,
हमको है प्राणों से प्यारा।

हरप्रसाद रोशन
हल्द्वानी (उत्तराखंड)

बालक बना महान

भारतीय अन्तरिक्ष अभियान के प्रणेता

विक्रम साराभाई

विक्रम साराभाई, दुनिया की महान विभूतियों में एक अद्वितीय नाम है जिन्हें भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रम का 'पितामह' माना जाता है। वे वैज्ञानिक होने के साथ ही एक कुशल उद्योगपति व अनेक वैज्ञानिक संस्थाओं के प्रवर्तक भी माने जाते हैं। विक्रम साराभाई ने ही अन्तरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में भारत को अन्तरराष्ट्रीय मानचित्र पर स्थान दिलाया।

बचपन में मेधावी व जिज्ञासु

विक्रम साराभाई का जन्म 12 अगस्त 1919 को अहमदाबाद के एक प्रसिद्ध उद्योगपति परिवार में हुआ। उनके पिता अम्बालाल साराभाई बहुत बड़े व्यापारी थे तथा माता सरला देवी एक कुशल शिक्षिका थीं। साराभाई का विवाह शास्त्रीय नृत्यांगना मृणालिनी से हुआ। उनकी दो सन्तानें हुई। बेटी मल्लिका साराभाई और बेटा कार्तिकेय साराभाई।

प्रतिष्ठित परिवार होने के कारण हर क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण लोग उनके घर पर आकर ठहरते थे। उनसे बातें करना विक्रम को बहुत अच्छा लगता था। एक बार महान वैज्ञानिक सी वी रमन भी वहाँ ठहरे और उनसे बात की तो उनका पूरा झुकाव विज्ञान की तरफ हो गया। उनके बचपन के खिलौने भी रेल इंजन, मशीन से चलने वाले थे जिन्होंने उनकी तकनीकी जिज्ञासा को और जाग्रत कर दिया।

विक्रम को पत्र प्राप्त करना बहुत अच्छा लगता था। एक बार वह अपने परिवार के साथ शिमला गए। वहाँ उन्होंने देखा कि उनके पिताजी के नाम पर ढेरों पत्र आ रहे हैं। यह देखकर उनके मन में भी इच्छा हुई कि मेरे नाम पर भी पत्र आने चाहिए। बस फिर क्या था। वे स्वयं ही खुद को पत्र लिखते और लिफाफे में अपना नाम लिखकर डाकघर में डाल देते थे।

विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की

उनकी प्रारम्भिक शिक्षा उनके माता–पिता द्वारा चलाए गए अपने घर के निजी स्कूल 'रिट्रीट' में हुई। कॉलेज शिक्षा उन्होंने गुजरात के कॉलेज में की। सन 1937 में वे उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड चले गए और वहाँ सन 1940 में कैंब्रिज से गणित और भौतिकी में बी एससी की डिग्री प्राप्त कर भारत लौट आए। उन्होंने अपना पहला अनुसंधान लेख "टाइम डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ कॉस्मिक रेज़" भारतीय विज्ञान अकादमी की कार्य विवरणिका में प्रकाशित किया।

उल्लेखनीय शोधकार्य

भारत आने पर उन्हें सर सी. वी. रमन तथा डॉक्टर होमी जहाँगीर भाभा का सान्निध्य मिला। वह मन लगाकर अपनी खोज में जुट गए। डॉक्टर साराभाई ने अन्तरिक्ष की गहराइयों से आने वाली रहस्यमयी कॉस्मिक किरणों पर अनुसंधान किया। उन्होंने ब्रह्मांड तथा सौरमंडल के कई जटिल प्रश्नों के हल निकाले और तो और उन्होंने देश में वस्त्र उद्योग की तकनीकी समस्याओं के चलते अहमदाबाद में ही टेक्सटाइल इंडस्ट्रीज रिसर्च एसोसिएशन की स्थापना कर दी। उन्होंने भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला में सूर्य, ग्रह, तारा, प्लाज्मा, भौतिक एवं खगोल जैसे महत्त्वपूर्ण तथ्यों पर कार्य किया।

प्रमुख पदों से सेवा कार्य

डॉ विक्रम साराभाई देश–विदेश में अनेक उच्च पद पर रहे। वे सन् 1966 में इंटरनेशनल काउंसिल ऑफ साइंटिफिक यूनियन के सदस्य रहे। 1968 में संयुक्त राष्ट्र के यूनेस्को में विज्ञान विभाग के अध्यक्ष के पद पर कार्यरत रहे, बाद में 1970 में वियेना शांति अंतरराष्ट्रीय मंच की 14वीं परिषद के प्रमुख बने और 1971 में संयुक्त राष्ट्र संघ परिषद के विज्ञान विभाग के अध्यक्ष बने।

डॉ विक्रम साराभाई की मृत्यु के बाद उनके द्वारा दिए गए सुझाव पर चलकर भारतीय वैज्ञानिकों ने सन 1975 में स्वदेश में निर्मित प्रथम उपग्रह 'आर्यभट्ट' को अन्तरिक्ष में भेजने में कामयाबी प्राप्त की। इसी उपग्रह के कारण ही ग्रामीण क्षेत्रों में टेलीविजन का प्रसारण, शिक्षा, कृषि जैसे क्षेत्रों की विशेष प्रगति सम्भव हो सकी। आज भी इस उपग्रह के माध्यम से ही मौसम का पूर्वानुमान लगाने में मदद मिलती है। इसके अलावा वस्त्र उद्योग, औषधि, परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में भी उनका नाम और काम सदा अग्रणी रहेगा।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी

डॉ. विक्रम साराभाई विज्ञान के अलावा सांस्कृतिक गतिविधियों में भी रुचि रखते थे। वे संगीत, फोटोग्राफी, पुरातत्व, ललित कलाओं जैसे अनेक क्षेत्रों से जुड़े थे। उनकी बेटी मल्लिका साराभाई भी भरतनाट्यम और कुचिपुड़ी की सुप्रसिद्ध नृत्यांगना बनीं। उन्होंने मंचन कलाओं की संस्था 'दर्पण' का गठन भी किया।

वैसे तो उन्हें अनेक पुरस्कार मिले लेकिन सर्वोच्च पुरस्कारों में सन 1962 में उन्हें डॉक्टर शान्ति स्वरूप भटनागर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सन 1966 में भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण एवं सन 1972 में उन्हें मरणोपरांत पद्म विभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

देहावसान

52 वर्ष की अल्प आयु में ही 30 दिसंबर 1971 के दिन उन्हें त्रिवेंद्रम में लॉन्चिग स्टेशन चुंबा में कार्य का निरीक्षण करने भेजा था, जहाँ रात को होटल में ही हृदय गति रुक जाने से वे चिर निंद्रा में चले गए। डॉ. विक्रम साराभाई जैसी विभूति का चले जाना देश के लिए अपूरित क्षति है।

इस महान वैज्ञानिक के सम्मान में तिरुवनंतपुरम में स्थापित 'थुंबा इक्वेटोरियम रॉकेट लॉन्चिग स्टेशन' और सम्बद्ध संस्थाओं का नाम बदलकर "विक्रम साराभाई अन्तरिक्ष केंद्र" रख दिया गया। ये आज अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन साराभाई 'क्रेटर' के नाम से जाना जाता है। विक्रम साराभाई ने अन्तरिक्ष कार्यक्रम की शुरुआत से लेकर ISRO की स्थापना तक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

1972 में डाक विभाग द्वारा उनकी मृत्यु की पहली बरसी पर डाक टिकट भी जारी किया गया। भारत की ऐसी महान विभूति को हम शत–शत नमन करते हैं।

सुशीला शर्मा
जयपुर (राजस्थान)

''**तिनके वाला चोर नहीं**'' पृष्ठ 9 का शेष

तैयार किया था। चारा तैयार करते समय उसे काटना, छानना पड़ता है, यह तिनके बाल और कपड़ों पर तो गिरते ही हैं। कई बार आँखों में गिर जाते हैं। मालू के शरीर से एक भी तिनका नहीं मिला। इसलिए यह झूठ बोल रहा है कि आज यह अस्तबल में गया था। मालू बताओ, चोरी का माल कहाँ है?''

मालू समझ गया कि उसकी चोरी और चालाकी पकड़ी गई। वह क्षमा माँगते हुए राजा के पैरों में गिर पड़ा।

गोविन्द शर्मा
संगरिया (राजस्थान)

रंग भरो

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

'बचाया भँवर जाल से' पृष्ठ 7 का शेष....

उन दोनों को बचाना अब पहले जैसा सीधा काम नहीं रह गया था। उन्हें पहले उस भँवर के चक्रव्यूह से आजाद कराना था फिर उन्हें किनारे तक सुरक्षित लेकर जाना था। असित वहीं रुककर उनको उस भँवरजाल से निकालने की कोशिश करने लगा। पानी के भँवर ने उसे भी चक्कर खिलाने शुरू कर दिया। कई चक्करों के बाद असित ने उन दोनों को तो उस भँवर के जाल से बाहर निकाल दिया मगर खुद उसमें ही फँसा रह गया। वे दोनों असित का सहारा पाकर खुद को भँवर के उस जाल से मुक्त होकर किनारे तक जा लगे।

मगर इस सारे प्रयास में असित अब तक काफी थक चुका था। असित ने उन दोनों को खतरे से बाहर निकाल दिया था। पानी के उस भँवर ने उसे अपने चंगुल से बाहर नहीं निकलने दिया। बाद में असित के शव को ही बाहर निकाला जा सका।

इस तरह अपनी जान की कुरबानी देकर असित ने श्रीदेवी प्रसन्ना और अपने चचेरे भाई अमित कुमार की जान बचा दी थी। उसके साहस ने उन दोनों की प्राणरक्षा की थी। असित की इस बहादुरी की घटना पर सभी ने उसकी इस हिम्मत की सराहना की। भारतीय बाल कल्याण परिषद द्वारा उसको मरणोपरांत राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार हेतु चयन किया गया एवं जनवरी 2004 के गणतन्त्र दिवस के अवसर पर देश के प्रधानमन्त्री द्वारा उसके माता–पिता को यह पुरस्कार प्रदान किया गया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

शहीदों को श्रद्धांजलि

राष्ट्रीय समर स्मारक

हमारे सशस्त्र सैनिकों को आजादी के बाद कई युद्धों एवं संघर्षो से गुजरना पडा। उन्होंने देश तथा विदेश में कई सैन्य ऑपरेशन में भाग लिया। सीमा पार से हमारे देश पर थोपे जा रहे युद्ध व आतंकवादरोधी ऑपरेशन से जूझते हमारी सेना के जवान कर्त्तव्य पालन के दौरान बडी संख्या में शहीद होते रहे।

समर स्मारक (War Memorial) स्वतन्त्रता के बाद भारतीय सशस्त्र सेनाओं के 25942 से ज्यादा सैनिकों के अद्भुत बलिदान की याद दिलाता है जिन्होंने देश की प्रभुसत्ता और अखंडता की रक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान दिये। सशस्त्र सैनिकों के पुरुष और महिला सैनिकों के बलिदान पर समर्पित राष्ट्रीय स्तर पर कोई स्मारक अब तक मौजूद नहीं था। गहन विचार विमर्श के बाद केन्द्रीय मन्त्रिमंडल ने 7 अक्टूबर 2015 को इसके निर्माण का समर्थन किया।

स्मारक को इंडिया गेट के पास ('सी' हेक्सागन) षटकोणीय आकार में इंडिया गेट के पूर्व में स्थित, मौजूदा छतरी 'चंदावा' के आस पास 44 एकड़ में बनाया गया है। स्मारक की दीवारों को मौजूदा वास्तुसौन्दर्य के साथ तालमेल स्थापित करते हुए बनाया गया। स्मारक के लिए डिजाइन का चयन करने के लिए 2016–17 में एक प्रतियोगिता आयोजित की गई। वीबी डिजाइन लैब चैन्नई को विजेता घोषित किया गया। उसके पश्चात योगेश चन्द्रहासन सलाहकार नियुक्त किये गये। भारत के रक्षा मंत्रालय के सम्बन्धित विभाग द्वारा परियोजना का क्रियान्वयन किया गया और प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने 25 फरवरी 2019 को यह स्मारक राष्ट्र की ओर से सशस्त्र सेनाओं को समर्पित किया।

युद्ध स्मारक एक इमारत, प्रतिमा या कोई अन्य भवन होता है जो पर्यटकों को उस स्थान के साथ संचेतन रूप से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है। स्मारक गहन भावनायुक्त अनुभव प्रदान करता है जो भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनता है। आजादी के बाद 1947–48, 1961 गोवा, 1962 चीन, 1965 1971 पाकिस्तान, 1987 सियाचिन, 1987–88 श्रीलंका, 1999 कारगिल और युद्ध रक्षक जैसे अन्य युद्धों में शहीद हुए 13300 भारतीय सैनिकों के नाम यहाँ पत्थरों पर लिखे गए हैं।

स्मारक में चित्रदीर्घा (गैलरी) भी बनाई गई है। राष्ट्रीय समर स्मारक में 21 परमवीर विजेताओं की कांस्य की प्रतिमा स्थापित की गई है। युद्ध के अद्भुत

देखें पृष्ठ 16...

आजादी का उल्लास

सूरज और उसके दोस्त स्वतन्त्रता दिवस को लेकर बड़े उत्साहित थे। हर साल इस दिन वे सब स्कूल में खुशियाँ मनाते करते थे। सारी प्रतियोगिताओं में भाग लेते। मैडल जीतते। मिठाई खाते। देशभक्ति गीत गाते। उनका पूरा दिन बड़ा अच्छा गुजरता। पूरे दिन आजादी का एक अनोखा उल्लास उन लोगों में छाया रहता था।

इस वर्ष भी उन लोगों ने बड़े उत्साह के साथ स्वतन्त्रता दिवस मनाने का मन बनाया था। स्कूल के साथ–साथ अपनी कॉलोनी में भी स्वतन्त्रता दिवस मनाने की योजना बन रही थी। "इस बार हम सब लोग अपने घरों की छत पर तिरंगा झंडा लगाएँगे।" सूरज ने अपने दोस्तों से कहा।

"हाँ जरूर! आखिर तिरंगा हमारे देश की आन–बान–शान जो है। जब ये शान से फहरता है तो मन को बड़ा सुकून मिलता है।" सुनील ने कहा। "देश को आजाद करने वालों ने इस झंडे के लिए अपने प्राणों का बलिदान दे दिया था। ये हमारा स्वाभिमान है।" किशोर ने कहा। "तुम सब ठीक कहते हो। स्कूल जाने से पहले हम सब अपने घरों पर तिरंगा लगाएँगे।" कमल बोल पड़ा।

"इसके लिए हमें झंडों की आवश्यकता भी तो होगी।" विपिन ने कहा। "हाँ! वह तो है। परसों स्वतन्त्रता दिवस है। हम कल ही बाजार से अपने–अपने घरों के लिए तिरंगा खरीद कर ले आएँगे।" सूरज ने कहा। "हाँ! कल सब बाजार चलते हैं। शाम को स्कूल से लौटने के बाद। ठीक 5 बजे मिलते हैं।" कमल ने कहा।

इसके बाद सभी अपने–अपने घर को चले गए। अगले दिन ठीक समय पर सभी दोस्त मिलते हैं और खरीददारी के लिए बाजार जाते हैं। पूरा बाजार तिरंगे झंडों, टोपियों, गुब्बारों, बैंड आदि से सजा होता है। ये सब देखकर सभी को बहुत अच्छा लगता है। "ये वाला झंडा ले लें।" किशोर ने प्लास्टिक के झंडों की तरफ इशारा करते हुए कहा। "अरे नहीं। बिलकुल भी नहीं। प्लास्टिक के झंडे का प्रयोग बिलकुल भी नहीं करना चाहिए। हमें पन्द्रह अगस्त पर कपड़े के झंडों का ही प्रयोग करना चाहिए।" सूरज ने कहा।

"सूरज ठीक कहता है। हम कपड़े का झंडा ही खरीदेंगे।" सुनील बोला। सभी दोस्त अपने लिए एक–एक तिरंगा खरीद लेते हैं। सूरज और कमल दो–दो झंडे एक्सट्रा खरीदते हैं। "तुम दोनों तीन–तीन झंडे क्यों खरीद रहे हो।" किशोर ने पूछा। "हमारी कॉलोनी में सबके घरों पर झंडा फहरेगा। अगर किसी के घर पर झंडा नहीं लगा होगा तो हम ये झंडा उनकी घर की छत पर लगा देंगे। इसलिए हम दोनों ने मिलकर चार झंडे अधिक ले लिए हैं।" कमल ने कहा।

"वाह! ये तो बहुत अच्छा आईडिया है। पूरी कॉलोनी में सबके घरों में तिरंगा लहरायेगा। कितना अच्छा दृश्य होगा।" सुनील ने कहा। इसके बाद सभी

बच्चे तिरंगा लेकर अपने–अपने घर को चल दिए। वे आपस में देश की आजादी में शहीद हुए क्रांतिकारियों के बारे में चर्चा कर रहे थे। वे लोग महात्मा गांधी, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, सुभाष चन्द्र बोस, वीर सावरकर, चन्द्रशेखर आजाद सभी को याद करने लगे। उन सब के बारे में एक दूसरे से अपनी जानकारी साझा करने लगे।

थोड़ी देर में सब अपने–अपने घर पहुँच गए। अगले दिन सुबह सभी बच्चे सज–धज कर तैयार हो गए। सभी ने अपने घरों की छत पर तिरंगा झंडा लगाया। पूरी कॉलोनी तिरंगे से सज चुकी थी। हर घर पर बड़ी शान से तिरंगा लहरा रहा था। तभी सूरज की नजर कॉलोनी से कुछ दूरी पर बनी झुग्गियों पर पड़ी। वहाँ तीन–चार परिवार रहते थे। उन लोगों की झुग्गियों पर तिरंगा नहीं दिखाई दे रहा था। सूरज ने सोचा इन लोगों की झुग्गियों पर भी तिरंगा होता तो कितना अच्छा होता।

उसने ये बात अपने दोस्तों को बताई और कहा– "आजादी का उल्लास मनाने का अधिकार सभी को है। चाहे कोई गरीब हो या अमीर। किसी भी जाति या धर्म का ही क्यों न हो। हमारी कॉलोनी के पास बनी झुग्गियों में तिरंगा नहीं दिखाई दे रहा है। मैं चाहता हूँ कि हम सब वहाँ जाएँ और उन परिवारों को तिरंगा भेंट करें। ताकि वे भी तिरंगा फहरा सकें।"

"ये तो बहुत अच्छी बात है। हमें अभी चलना चाहिए।" कमल ने कहा। सभी दोस्त तिरंगा लेकर झुग्गियों की ओर चल दिए। वहाँ पहुँच कर उन्होंने सभी को नमस्ते किया। उन्हें स्वतन्त्रता दिवस की बधाई दी। साथ ही तिरंगा झंडा भेंट किया। झुग्गियों में रहने वाले बच्चे तिरंगा झंडा देखकर बहुत खुश हो गए।

झुग्गियों में रहने वाले बुजुर्गों ने झंडा उचित स्थान पर लगाया और उसे सलाम किया। ये देखकर सूरज, कमल और सभी साथी बहुत खुश हुए। अब चारों तरफ तिरंगा ही तिरंगा दिखाई दे रहा था। सारा आसमान आजादी के उल्लास में डूब चुका था।

ललित शौर्य
मुवानी, पिथौरागढ़ (उत्तराखंड)

'राष्ट्रीय समर स्मारक' पृष्ठ 14 का शेष

दृश्य प्रस्तुत करती कलाकृतियाँ है। समर स्मारक के मध्य में एक (सेंट्रल ओबिलिस्क) एक सदा जलने वाला दीप, भित्ति चित्र, ग्राफिक्स पैनल, शहीदों के नाम के शिलालेख आदि शामिल हैं।

इस स्मारक को बनाने की कुल लागत 176 करोड़ रुपए आई। इसकी मुख्य संरचना को चार चक्रों में बनाया गया हैं। प्रत्येक चक्र सशस्त्र बलों के विभिन्न मूल्यों को दर्शाता है। इस चक्रव्यूह की संरचना से प्रेरणा लेते हुए बनाया गया है। इसके मुख्य स्तम्भ पर अशोक स्तम्भ की आकृति है जिसके नीचे सत्यमेव जयते, अमर जवान लिखा है। उसके पश्चात सीधी संरचना है नीचे चार स्थान पर ज्योति दीप की व्यवस्था है। पत्थर की मुख्य चौकी पर नीचे लिखा है– **''शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले, वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा।''**

❑ पहला चक्र : अमर चक्र जो बीचों बीच है। यहाँ ज्योति के साथ एक स्मारक स्तंभ है। यह ज्योति शहीद सैनिकों की आत्मा की अमरता का प्रतीक है।

❑ दूसरा चक्र : वीरता चक्र–इसमें सशस्त्र सेनाओं द्वारा लड़ी गई छह वीरतापूर्ण लड़ाइयों को कांस्य भित्ति चित्रों के माध्यम से दिखाया गया है।

❑ तीसरा चक्र : त्याग चक्र– यहाँ दीवारों पर ग्रेनाइट की पट्टियाँ लगी हैं और सर्वोच्च बलिदान करने वाले सैनिक को एक ग्रेनाइट पट्टी समर्पित है और उनके नाम स्वर्णाक्षरों में खोदे गये हैं।

❑ चौथा चक्र रक्षक चक्र : इस चक्र में घने वृक्षों की पंक्ति किसी भी प्रकार के खतरे से देश के नागरिकों को सुरक्षा का आश्वासन देती है। यहाँ प्रत्येक वृक्ष राष्ट्र की क्षेत्रीय अखंडता की दिन रात रक्षा करने वाले बहुत से सैनिकों का प्रतिनिधित्व करता है। यह शहीदों के नाम से बनाया गया स्मारक है। इसलिये यहाँ गरिमापूर्ण और सम्मानजनक व्यवहार करें।

प्रभा पारीक
भरूच (गुजरात)

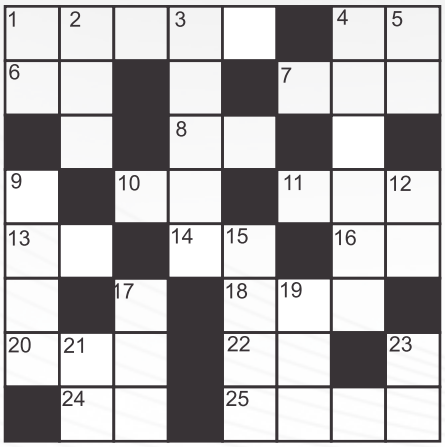

वर्ग पहेली

1	2		3		■	4	5
6		■		■	7		
■		■	8		■		■
9	■	10		■	11		12
13		■	14	15	■	16	
	■	17	■	18	19		■
20	21		■	22		■	23
■	24		■	25			

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

बाएँ से दाएँ

1. वैदिक काल के एक प्रसिद्ध महर्षि (5)
4. ब्रेड, बिस्किट का आटा (2)
6. माप लम्बाई चौड़ाई (2)
7. हाथी की मादा (3)
9. दुःखी का विपरीतार्थ (2)
10. गौरव (2)
11. कृष्ण का एक नाम (3)
13. सच, यथार्थ (2)
14. पद्य रचनाकार (2)
16. खून, लहू (2)
18. दशानन, लंकापति (3)
20. अचानक (3)
22. महोदय (2)
24. रक्षाबंधन (2)
25. किस्मत, नसीब (4)

ऊपर से नीचे

1. शादी के बाद दूसरी बार बेटी की विदाई (2)
2. गर्मी (3)
3. इंग्लैंड के प्रधानमन्त्री (5)
4. राष्ट्रीय कवि (3,3)
5. दान करने वाला (2)
9. दाख, द्राक्षा (4)
12. समय (2)
15. उत्तराधिकार में मिला धन (4)
17. दिव्यांग इसके सहारे चलते हैं (3)
19. मिठाई पर लगने वाला चमकीला कागज (3)
21. एक रंग (2)
23. वजन, बोझ (2)

उत्तर इसी अंक में

कबीर वाणी...

इनसान को ऐसी भाषा बोलनी चाहिए जो सुनने वाले के मन को बहुत अच्छी लगे। ऐसी भाषा दूसरे लोगों को तो सुख पहुँचाती ही है, इसके साथ खुद को भी बड़े आनन्द का अनुभव होता है।

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोये,

औरन को शीतल करे, आपुं शीतल होय।

रानू बोला

ए बी सी डी मुझे न लिखना,
नहीं पढ़ूँगा क का कि की।
नहीं रटूँगा गिनती पहाड़े,
नहीं जोड़ना और बाकी।।

नहीं कहानी मुझे सुनानी,
नहीं प्रश्न कोई स्वीकार।
गला फाड़ अब न गाऊँगा,
ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार।

हुआ सभी को अचरज भारी,
सुनकर रानू जी की पीर।
पापा, मम्मी, दीदी, भैया,
पूछें "क्यों तुम हुए अधीर?"

रानू बोला– मोबाइल की,
लगी तुम्हें अब बीमारी।
नहीं सिखाते, नहीं पढ़ाते,
बात न करते तुम प्यारी।

इसीलिए अब खेलूँगा बस,
काटूँगा स्कूल का फंद।
अगर नहीं छोड़ा मोबाइल,
पढ़ना लिखना मेरा बन्द।

अंजीव अंजुम
मथुरा (उत्तर प्रदेश)

तब होगी सच्ची आजादी

मन में कोई सपना लेकर
हर बच्चा जब पढ़ने जाए,
बस्ते में हों नई किताबें
उनमें कोयल कुहुक सुनाए।

उसी कुहुक के साथ चहकता
हर बच्चे का मन मुसकाए,
हर बच्चा जब हँसे फूल सा
हर बच्चा जब हँसकर गाए,
तब होगी सच्ची आजादी,
हाँ, होगी सच्ची आजादी!

पढ़कर निकलेंगे हम आगे
सुलझेंगे तब उलझे धागे,
रंग–रंगीले सारे सपने,
हो जाएँगे पल में अपने।

सुबह महकते फूलों सी हो,
शाम सुरीली कथा सुनाए,
हाथ बढ़ाकर अम्बर छू लें
मंजिल कदमों तक आ जाए,
तब होगी सच्ची आजादी,
हाँ, होगी सच्ची आजादी!

अभी सफर है लम्बा कितना
अभी दलिद्दर फैला, भाई,
बड़ी गरीबी, बड़ी अशिक्षा
लोगों का मन मैला, भाई।

मिलकर दूर करेंगे यह सब
भारत नया बनाएँगे हम,
कल का भारत उजला होगा
सपना सच कर जाएँगे हम।

सब हाथों को काम मिलेगा
सबको भाई नाम मिलेगा,
मेहनत करने वालों को तो
हर दिन नया इनाम मिलेगा।

मिट जाएगी सबके दिल से
काली नफरत वाली आँधी,
बच्चा–बच्चा राम बनेगा
बच्चा–बच्चा होगा गाँधी,
तब होगी सच्ची आजादी,
हाँ, होगी सच्ची आजादी!

प्रकाश मनु
फरीदाबाद (हरियाणा)

पात्र– नानी और कुछ बालक–बालिकाएँ– चीनू, दीपा, दीनू, आदि।

(तीन–चार बच्चों को नानी कहानी सुना रही हैं।)

बच्चे : हाँ नानी, सुनाओ ना।

नानी : ठीक है। आज तुम्हें गोलू बन्दर की कहानी सुनाती हूँ –

एक था गोलू बन्दर,
पेड़ पर बैठा डाल पकड़।
नटखट थोड़ा–थोड़ा,
पर था वो बड़ा भुलक्कड़।
– सभी दोहराएँ
लाना है सामान बाजार से,
माँ ने ये समझाया,
एक–एक के दस सिक्के,
और थैला उसे थमाया।
–सभी दोहराएँ

दीनू : एक रुपये के सिक्के ही दिये ना नानी ?

नानी : हाँ! सब्जी की दुकान पर पहुँचा,
जब अपना ये गोलू,
बिल्ली मौसी ने दे दिये
दो रुपये के आलू।
–सभी दोहराए / बिल्ली की आवाज
तो बच्चो, अब उसके पास कितने सिक्के बचे?

दीपा : मैं बताऊँ नानी...–सभी दोहराएँ

दीपा : आठ सिक्के।

नानी : सही बताया। देख जलेबी रहा नहीं, अब गोलू का मन वश में। सभी कहेंगे 'जलेबी तो मुझे भी पसन्द है'। हाँ, तो पता है गोलू ने क्या किया? सभी–क्या किया? गरम जलेबी का दोना, ले लिया एक रुपये में।

(सब हँसते हैं।)

दीपा : आगे सुनाओ नानी। –सभी दोहराएँ

नानी : तो बच्चो, सिक्के बचे अब सात, कितने सिक्के बचे?

सभी : 'सात' और गोलू भूल गया सब बात। –सभी दोहराएँ

गोलू बन्दर

टिकिट खरीदा दो रुपयों का,
चला देखने नाच। सभी दोहराएँ
गिन कर अब देखे सिक्के तो,
बचे थे केवल...

सब : पाँच।

चीनू : फिर क्या हुआ नानी।

नानी : फिर, भूख लगी हो तो फिर, और भला क्या सोचे। तीन रुपये के खा लिये, चटनी और समोसे। (सभी दोहराएँ)
तो बताओ, अब कितने बचे सिक्के ?

दीपा : (सोचकर) नानी अब तो दो सिक्के ही बचे ना?

नानी : हाँ! सिक्के बचे थे अब केवल दो, अब बोलो,क्या करेगा वो ? (सभी दोहराएँ)

दीनू : अपना सामान खरीदेगा, और क्या?
(सभी हँसते हैं)

नानी : (हँसते हुए) अब कहूँ क्या बात,
होने लगी थी रात।
सुनसान सड़क को देख,
गोलू जी अब घबराए। (सभी दोहराएँ)
गिरे जेब से सिक्के, और हाथ से गिर गए आलू, पता है बच्चों फिर क्या हुआ?

सभी : 'क्या हुआ?'
सरपट दौड़ा गोलू बन्दर,
खाली थैला लटकाकर । (सभी दोहराएँ)

चीनू : फिर तो बड़ी मार पड़ी होगी ना नानी?
(सभी हँसते हैं)

नानी : माँ ने पूछा खाली है थैला,
सामान क्यूँ नहीं लाए?
डर से थर–थर काँप,
गोलू रह गए मुँह लटकाए ।
(सभी दोहराएँ । सब हँसते हैं।)

उमेशकुमार चौरसिया
अजमेर (राजस्थान)

दिमागी कसरत

इस शब्द पहेली में दिये गये संकेत के आधार पर सही अक्षर भरें और सही शब्द बनाएँ। पंक्ति 1 से 4 के शब्दों में 'क' अन्त में और 5 से 8 के शब्दों में 'क' प्रारम्भ में है।

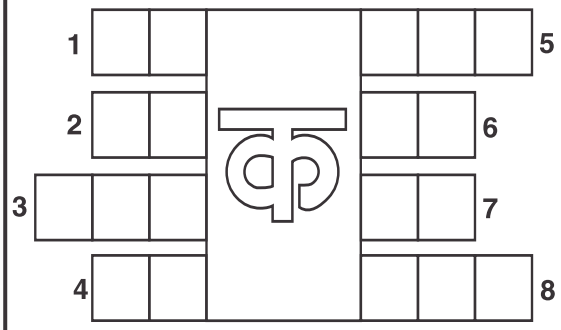

संकेत –

1. **आँख का एक भाग**
2. **पक्का रास्ता**
3. **गणेश**
4. **सफेद खाद्य पदार्थ**
5. **एक भोला पक्षी**
6. **सर्दी से बचाव का साधन**
7. **सोना, स्वर्ण**
8. **भारत का एक दक्षिणी राज्य**

उत्तर इसी अंक में

प्रकाश तातेड़,
उदयपुर (राजस्थान)

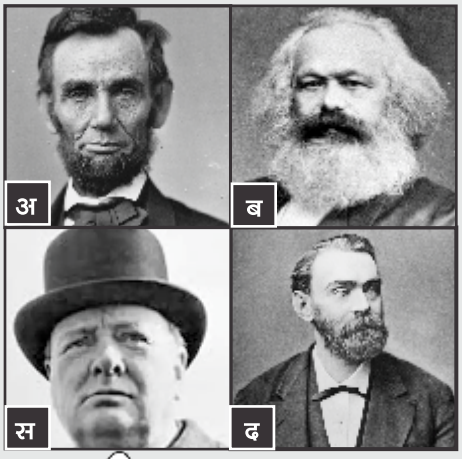

दस सवाल दस जवाब

(1) इन व्यक्तियों को पहचानिये।

(2) संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे?

(3) अरस्तू के गुरु कौन थे?

(4) समुद्री मार्ग से भारत आने वाला प्रथम यात्री कौन था?

(5) फ्रांस के किस सम्राट को 'लिटिल कॉरपोरल' भी कहा जाता है?

(6) 1964 में शान्ति के लिए नोबेल पुरस्कार प्राप्त अमेरिकी अहिंसावादी अश्वेत नेता का नाम क्या है?

(7) किस व्यक्ति को चीन में साम्यवाद का जनक कहा जाता है?

(8) मिकी माऊस और डोनाल्ड डक जैसे पात्रों के जन्मदाता कौन थे?

(9) किस आयरिश महिला ने 'होमरूल लीग' की स्थापना की?

(10) चार्ली चैपलिन को विश्व में किस रूप में याद किया जाता है?

उत्तर इसी अंक में

- चिंटू जरा बताओ, I am Going का मतलब क्या होता है?

  मिंटू – मैं जा रहा हूँ।

  चिंटू– अरे! मैं 20 लोगों से पूछ चुका हूँ। सब चले जाने की बात करते हैं लेकिन जवाब कोई नहीं बताता।

- टीचर ने परीक्षा में चार पेज का निबंध लिखने को दिया। विषय था– आलस्य क्या है? एक विद्यार्थी ने तीन पेज खाली छोड़कर चौथे पर बड़े–बड़े अक्षरों में लिखा– यही आलस्य है।

प्रिशा चौखड़ा, कक्षा-9, ठाणे (महाराष्ट्र)

विशेष – बाल पाठक भी चुटकुले भेज सकते हैं।

पांचवीं शताब्दी में राजगीर (बिहार) के निकट नालंदा एक बहुत बड़े विश्वविद्यालय के रूप में विख्यात था जिसमें दस हज़ार छात्र पढ़ा करते थे। ऐसा माना जाता है कि इसके पुस्तकालय में तीन लाख किताबें थीं जबकि कई जगह तो इनकी संख्या नब्बे लाख तक दर्शाई जाती है।

यह भी कहा जाता है कि सन 1193 में विदेशी आक्रान्ताओं (बख्तियार खिलजी जैसे) द्वारा इसकी इमारत में आग लगा दिए जाने पर यह आग तीन महीने तक धधकती रही थी।

कप्तान जोया अग्रवाल न केवल बोईंग 777 उड़ाने वाली सबसे कम उम्र की पहली महिला पायलेट हैं वरन पूरे महिला चालक दल के साथ बोईंग 777 में ही सैनफ्रांसिस्को से बेंगलुरु तक की सबसे लम्बी यात्रा और वह भी उत्तरी ध्रुव के ऊपर से करने वाली पहली साहसी महिला पायलेट भी हैं जिन्होंने इस यात्रा के जोखिम को जानते हुए भी इस चुनौती को सहर्ष स्वीकारा और इसे सफलतापूर्वक पूरा भी किया।

रवि लायटू
बरेली(उत्तर प्रदेश)

प्लास्टिक की खोखली नली से बना रिंग, जिसे हूला हूप कहते हैं, का संतुलन बनाये रखकर बॉडी के चारों ओर घुमाते हुए चेन्नई (तमिलनाडु) के दस वर्षीय आधव सुगुमार ने इसे घुमाने के साथ-साथ सीढ़ियां चढ़ते हुए इस सीढ़ी के 50 पायदान महज़ 18.28 सेकेंड में पार करके गिनेस बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकार्ड्स में अपना नाम दर्ज करा लिया।

30 किमी. लम्बाई वाली दुनिया की सबसे लम्बी सैंडस्टोन गुफ़ा मेघालय राज्य में क्रेमपुरी में है जिसमें डायनोसौर के 660 लाख से 760 लाख तक पुराने जीवाश्म मौजूद हैं।

आँखों ने कहीं अपनी कहानी

एक दिन कानों ने आँखों से कहा– "बहनो! आप अपनी आत्मकथा कहो। हम भी तो समझें कि तुम्हारे अन्दर की बनावट कैसी होती है और कैसे आप फटाफट काम करती हो?"

आँखों ने उत्तर दिया– "प्रिय भाइयो! आप कहते हो तो आज हम अपनी आत्मकथा सुनाते हैं।"

मानव शरीर में हम आँखें ही सबसे महत्त्वपूर्ण अंग होती हैं। हमको नेत्र तथा संस्कृत में अक्षि, नयनम और अँग्रेजी में हमें eye कहते हैं। हम मानव शरीर का वह अंग हैं जिनकी सहायता से हम सब कुछ देख सकते हैं और चीज़ों को उनके रंग, आकार आदि के आधार पर पहचान सकते हैं। हम मानव शरीर में मौजूद पाँचों इंद्रियों में से हम आँखें सबसे पहली और कीमती इंद्रिय हैं। इसके अलावा हम मानव शरीर का सबसे छोटा और जटिल अंग भी हैं।

आमतौर पर लगभग हम सभी आँखों का आकार अपने अधिकतम व्यास के साथ दो से ढाई सेंटीमीटर तक का होता है। हर मनुष्य के पास दो आँखें होती हैं, जो लगभग दो मिलियन मूविंग पार्ट्स से बनी होती हैं और इस मामले में हम पहले स्थान पर आती हैं। दूसरा स्थान मानव मस्तिष्क को प्राप्त है। हमारी आँखें किसी भी एक रंग के 500 से अधिक प्रकारों में अन्तर कर सकती हैं और 2.7 मिलियन से अधिक रंगों को पहचान सकती है।

आप यह भी जानना चाहोगे कि हम आँखों की संरचना कैसी होती है, हम काम कैसे करती हैं? तो सुनो, हम आँखों की संरचना एक छोटी गोल बॉल के समान होती है जो नेत्र कोटर में मांस पेशियों की सहायता से जुड़ी रहती है। नेत्र के अग्रभाग में लेंस, कोर्निया और आइरिस जैसे महत्त्वपूर्ण भाग होते हैं।

हम आँखों के काम करने के तरीके को इस तरह समझ सकते हो। प्रकाश की किरणें जो कि किसी वस्तु से आती हैं हमारी आँखों में लगे लेंस के द्वारा प्रवेश करती हैं तथा प्रकाश की किरणें रेटिना पर प्रतिबिम्ब बनाती हैं। हमारा दृष्टि पटल एक तरह का प्रकाश संवेदी पर्दा होता है, जो कि हम आँखों के पृष्ठ भाग में होता है। दृष्टि पटल (रेटिना) विशेष प्रकार की प्रकाश सुग्राही कोशिकाओं का बना होता है जो प्रकाश तरंगों के संकेतों को मस्तिष्क तक भेजता है और हम सम्बन्धित वस्तु को देख पाते हैं।

क्या आप जानते हो? नेत्र में बनने वाला यह बिम्ब उल्टा होता है मगर यह भाग तंत्रिकाओं द्वारा मस्तिष्क से जुड़ा होता है। मस्तिष्क ही उस बिम्ब को सीधा देखने, समझने और पहचानने का काम करता है। यह भी जान लो कि हम आँखों के द्वारा किसी भी वस्तु को देख पाना एक जटिल प्रक्रिया होती है।

कानों ने जब आँखों की उपयोगिता, संरचना के बारे में सुना तो वह दोनों चकित होकर मुस्कुरा उठे और बोले– "वाह बहनो, आप सच में ही दोनों तो सबका जीवन हो। देखो, उन नयनहीन मनुष्यों को जो तुम्हारे बिना किस तरह कठिनाई भरा जीवन जीते हैं। हर काम करने में उन्हें बहुत कठिनाई होती है। हमेशा गिरने पड़ने का डर लगा रहता है। सारी सृष्टि की चीजें अनजान–सी लगती हैं।"

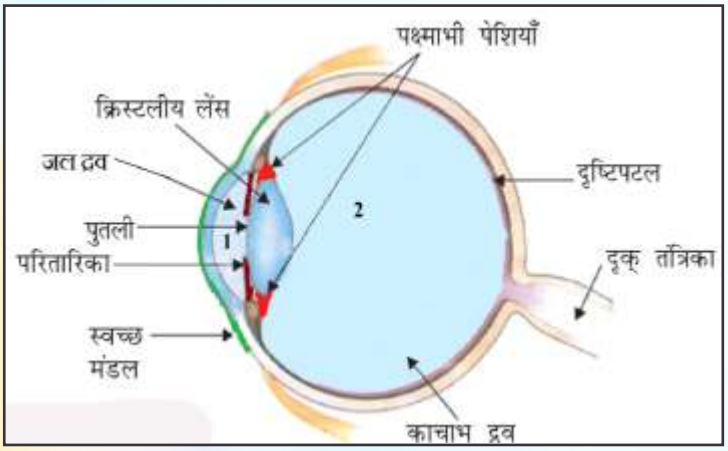

प्रेरक वचन

मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं, अपितु परिस्थितियाँ मनुष्य की दासी हैं।

❖

समय मूल्यवान अवश्य है किन्तु सत्य समय से भी अधिक मूल्यवान हैं।

❖

विपत्ति के समान कोई शिक्षा नहीं है।

❖

धीरज प्रतिभा का एक आवश्यक अंग है।

❖

उद्देश्य में निष्ठा सफलता का रहस्य है।

बेंजामिन डिजरायली

सुखदायक जीवन

हँसमुख रहे हमेशा ही जो,
भले निराशा के पल आएँ।
सींचे जीवन के उपवन को,
चाहे उसमें कम फल आएँ।।

भूख मिटाए जो भूखों की,
प्यासों की जो प्यास बुझाए।
रिसते देखे घाव किसी के,
भेदभाव के बिन सहलाए।।

दिल में हरदम प्रेम, दया हो,
हो ईर्ष्या द्वेष से मुक्त मन।
जिसकी वाणी भी मीठी हो,
उसका है सुखदायक जीवन।।

विनय बंसल, आगरा (उत्तर प्रदेश)

कान ने अपनी अगली जिज्ञासा व्यक्त की– "बहनो! हमें यह भी बताओ कि आप दोनों स्वस्थ कैसे रहती हो?'' ''हाँ भाइयो, हम आपको यह भी बताएँगी कि हम जीवन भर किस प्रकार स्वस्थ रह सकती हैं।"

यह सभी जानते हैं कि हम आँखें हैं तो पूरा संसार अपना सा लगता है।

- हमें स्वस्थ रखने के लिए भरपूर नींद जरूरी है। इसके साथ ही प्रकृति के अनुकूल अपनी दिनचर्या बनाना अर्थात रात्रि को जल्दी सोना और प्रातःकाल में सूर्योदय से पूर्व जागना।
- अपने भोजन में हर मौसम की आनेवाली हरी व ताजा सब्जियों और फलों को जरूर शामिल करना अर्थात् उपयोग करना, विशेषकर गाजर, चुकंदर, खीरा, अदरक, नींबू, पालक आदि को सलाद रूप में कच्चा ही खाना। सभी तरह के फलों का उपयोग करना, विशेषकर पपीता, सेव, अमरूद, अनार व केला आदि।
- हो सके तो नंगे पाँव हरी घास में टहलना तथा सुबह शाम भ्रमण करना। हरे पेड़ पौधों को कुछ देर देखने से भी हम स्वस्थ रहती हैं।
- कुछ देर हम आँखों की पामिंग करना अर्थात अपनी हथेलियों से हल्का–हल्का दबाव देना। कम से कम 100 बार हमारी पुतलियों को चलाना। साथ ही हमें धूल मिट्टी और तेज धूप से बचाएँ। पर्याप्त मात्रा में पानी पीएँ।

हम दोनों आँखें ऐसा करने से हमेशा स्वस्थ और मस्त रहती हैं।

अरे वाह बहनो! आपने तो बहुत अच्छी–अच्छी बातें बताई हैं, अच्छा खानपान और हरी ताजी सब्जियाँ और फलों को खाने से तो हम कानों पर और शरीर के सभी अंगों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है। हाँ भैया, आप दोनों ठीक कह रहे हो। आप तो बड़े समझदार हो। इतना कहते ही दोनों कान और आँखें खिलखिलाकर हँस पड़े।

डॉ. राकेश चक्र
मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

आओ पढ़ें : नई किताबें

पहेलियाँ बूझना बच्चों का प्रिय खेल है। इससे उनका ज्ञानार्जन व मनोरंजन होता है। इस पुस्तक में सरल काव्य रूप में रचित 112 पहेलियाँ दी गई है। इनमें विषय की विविधता व रोचकता होने से बाल पाठक इसे अवश्य पसन्द करेंगे और सहर्ष उपयोग करेंगे।

पुस्तक का नाम : रोचक पहेलियाँ **लेखक :** गौरीशंकर वैश्य विनम्र
मूल्य : 120 रुपये **पृष्ठ :** 32 **संस्करण :** 2021
प्रकाशक : अभिराम प्रकाशन, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

यह एक बाल उपन्यास है जिसका नायक एक साहसी बालक है। वह गाँव की रहस्यमयी समस्या का कारण खोजकर राहत पहुँचाता है। कथानक में पर्याप्त रोचकता, धारा प्रवाह, जिज्ञासा एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समावेश होने से पुस्तक बाल पाठकों के लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक है। सुन्दर आवरण वाली सचित्र पुस्तक की पूरी कहानी 14 अध्यायों में विभाजित है।

पुस्तक का नाम : फूलों वाली घाटी का रहस्य **लेखक :** उषा सोमानी
मूल्य : 100 रुपए **पृष्ठ :** 82 **संस्करण :** 2022
प्रकाशक : ज्ञानमुद्रा पब्लिकेशन, भोपाल (मध्य प्रदेश)

बूझो तो जानें

1

बचपन में बन्दूक बोई,
आजादी का मतवाला।
असेंबली में बम फेंका,
कौन था वह हिम्मतवाला।

5

बचपन का नाम छबीली
बनी वह झांसी की रानी।
उसकी वीरता के आगे,
बड़े-बड़े भरते थे पानी।

2

सोलह वर्ष की आयु में,
बेंत भी सोलह खायीं।
अँग्रेजों से घिरने पर,
मौत को गले लगायी।

3

मेरठ छावनी के सैनिक ने
सरेआम विद्रोह किया।
उसके समर्थन में फिर सबने
अँग्रेजों से द्रोह किया।

4

बना फौज आजाद हिन्द,
दिल्ली चलो नारा लगाया।
जापान की मदद लेकर,
अँग्रेजों को खूब छकाया।

शशिबाला श्रीवास्तव, रायबरेली (उत्तर प्रदेश)

उत्तर इसी अंक में

OLD is GOLD

बच्चों का देश
अगस्त 2011

जलियाँवाला बाग

- उस दिन बैसाखी थी, दिनांक 13 अप्रैल 1919
- उस दिन वहाँ 4.30 बजे जनसभा हो रही थी।
- उस दिन सभी लोग निहत्थे थे।
- उस दिन जनरल डायर वहाँ पहुँच गया। उसके साथ बड़ी मात्रा में सिपाही थे।
- उस दिन जनरल डायर के सिपाहियों ने बाग को चारों ओर तथा दरवाजे को घेर लिया था।
- उस दिन जनरल डायर ने अचानक गोलियाँ चलाने का आदेश दे दिया।
- उस दिन सिपाही तब तक गोलियाँ चलाते रहे, जब तक सारे कारतूस समाप्त नहीं हो गए।
- उस दिन न जाने कितने लोग वहाँ बने कुएँ में कूद पड़े थे।
- उस दिन अँग्रेजी सरकार के अनुसार मृतकों की संख्या बहुत कम बताई गई।
- उस दिन लगभग बारह सौ लोग शहीद हुए तथा छः सौ से अधिक घायल हुए।
- उस दिन 1650 चक्र गोलियाँ चलाई गई।
- जलियाँवाला बाग में लगभग 10,000 लोग थे।
- उस दिन घायलों की डायर ने कोई सहायता नहीं की।

हमारा राष्ट्रगीत

वंदे मातरम्

- **किसने लिखा था**
  – श्री बंकिमचन्द्र चटर्जी
- **कब लिखा**
  – अक्टूबर–नवम्बर,1875 में
- **कब पूरा हुआ**
  – 7 नवम्बर 1875 (माना जाता है)
- **किस उपन्यास में लिखा**
  – आनन्द मठ
- **कब लिखा गया**
  – 1880
- **कब प्रकाशित हुआ**
  – 1880 से 1882 के बीच
- **कहाँ प्रकाशित हुआ**
  – बंग दर्शन में
- **कहाँ गाया गया**
  – काँग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशन में
- **कब गाया गया**
  – 1896 में
- **किसने गाया**
  – श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर ने
- **कब लोकप्रिय हुआ,**
  – बंगाल विभाजन के विरोध के समय
- **राष्ट्र गीत कब घोषित हुआ**
  – 1905 में
- **कहाँ हुआ**
  – बनारस में काँग्रेस के 21 वें अधिवेशन में।

दुनिया के दस आन्दोलनों में से एक दांडी यात्रा

बच्चो, बापू ने देश के लिए अपना जीवन लगा दिया था। उनके नेतृत्व में अनेक आन्दोलन हुए। उनमें दांडी यात्रा आन्दोलन बहुत महत्त्वपूर्ण था। इसे नमक सत्याग्रह के नाम से भी जाना जाता है। यह आन्दोलन सन् 1930 में शुरू किया गया था। इसमें बापू ने साबरमती आश्रम से दांडी गाँव तक यात्रा की थी और नमक कानून तोड़ा था। यह आन्दोलन अँग्रेज सरकार के नमक पर एकाधिकार के विरुद्ध था। भारतीय नमक नहीं बना सकते थे। इंग्लैंड से नमक आता था और भारतीयों को बहुत अधिक कीमत देनी पड़ती थी। यह आन्दोलन अँग्रेजी राज को हिला देने वाला था। इसलिए इस आन्दोलन को 'टाइम पत्रिका' ने दुनिया के दस बड़े आन्दोलनों में शामिल किया गया है।

राष्ट्रीय ध्वज : तिरंगा

हमारे राष्ट्रीय ध्वज में तीन रंगों को अपनाया गया है। सबसे ऊपर केसरिया रंग है जो शौर्य, बलिदान, त्याग तथा विरक्ति, विनम्रता का प्रतीक है। बीच में सफेद रंग की पट्टी है जो सत्य, सादगी और पवित्रता की प्रतीक है। सबसे नीचे गहरा हरा रंग समृद्धि का प्रतीक हैं यह तीनों रंग भारत के तीन प्रमुख धर्मों वैदिक, ईसाई तथा इस्लाम का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। राष्ट्रीय ध्वज में सफेद पट्टी के मध्य में गहरे नीले रंग का अशोक चक्र बना हुआ है। इस चक्र में 24 आरे है। जो हमें निरन्तर कार्यरत रहने की प्रेरणा देते हैं तथा शिक्षा देते हैं कि चौबीसों घंटे हमें अपने कर्त्तव्य का पूर्ण सच्चाई व ईमानदारी के साथ पालन करना चाहिए।

सूचना का अधिकार

भारत एक प्रजातांत्रिक देश है। यहाँ के संविधान में नागरिकों को कुछ मौलिक अधिकार दिये गये हैं। समय–समय पर इन अधिकारों में सुधार–संशोधन हुआ है, साथ ही कुछ नये अधिकार भी जोड़े गये हैं। इनमें सूचना का अधिकार अधिनियम एक ऐसा कानून है जो देश की नौकरशाही तंत्र में बढ़ते भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिये शुरू किया गया। मानव अधिकार की संकल्पना में सूचना का अधिकार एक बेहतर स्रोत है। इसकी अवधारणा सबसे पहले स्वीडन में की गई थी। भारत में सबसे पहले तमिलनाडु सरकार ने इसे कानून बनाकर पहल की। 12 अक्टूबर 2005 को संसद द्वारा पारित किये जाने के बाद जम्मू कश्मीर को छोड़कर शेष सभी राज्यों में सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 लागू हो गया।

देश में संविधान लागू होने के समय 26 जनवरी 1950 से लेकर 2005 तक पचपन वर्षों में देश के सरकारी तंत्र में आजादी व भ्रष्टाचार इस कदर से बढ़ता गया कि कार्यालयों में किसी भी काम की जानकारी या सूचना आसानी से नहीं मिलती थी। ऐसे में शासन के काम में तेजी व पारदर्शिता लाने के लिये सूचना का अधिकार अधिनियम पारित करने की आवश्यकता पड़ी। सर्वोच्च न्यायालय के अनुसार सूचना का अधिकार हमारे मौलिक अधिकारों का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

आर.टी.आई. यानी राईट टू इनफोर्मेशन एक्ट एक ऐसा कानून है जो हमें सरकारी कार्यालयों व विभागों से हमारे द्वारा माँगी गई जानकारी उपलब्ध कराता है। आर.टी.आई. के दायरे में आने वाले विभागों में सरकारी कार्यालय, लोकसेवा यूनिट, अदालतें, ससंद विधान मंडल, चुनाव आयोग, सरकारी हॉस्पीटल, स्कूल, स्थानीय संस्थाएँ व एन.जी.ओ. आदि विभाग आते हैं लेकिन खुफिया एजेंसी, वैज्ञानिक सूचनाएँ एवं देश की सुरक्षा को इस दायरे से बाहर रखा गया है।

आर.टी.आई. कानून का उद्देश्य सार्वजनिक विभागों के कामों की जवाबदेही तय करना व पारदर्शिता लाना है ताकि भ्रष्टाचार मिट सके। पहले सरकारी कार्यालयों में हमारे काम अटक कर रह जाते थे। इस कानून के आ जाने से अपने काम से सम्बन्धित जानकारी हमें शीध्र ही आसानी से मिल जाती है। आज भी प्रशासन में कुछ कर्मचारी नहीं चाहते कि सामान्य जानकारी लोगों तक पहुँचे। सरकारी कार्यालय गोपनीयता या व्यस्तता का हवाला देकर पल्ला झाड़ लेते हैं। फाइलों को दिखाने में आनाकानी करते हैं। पर सूचना के अधिकार के द्वारा हम अपनी जानकारी या सूचना आसानी से हासिल कर सकते हैं। इसके जरिये सरकारी निर्णय, कानून और नियम, काम की गुणवत्ता, खर्च के आँकड़े की जानकारी माँग सकते हैं।

इसके लिए निर्धारित आवेदन पत्र में या सादे कागज में आवेदन पत्र लिखकर सम्बन्धित विभाग को दस रुपये शुल्क के नकद बैंक चेक/ड्राफ्ट या चालान के माध्यम से जमा कराना होता है। गरीबी रेखा से नीचे परिवार वालों से शुल्क नहीं ली जाती है।

सूचना के दस्तावेजों की प्रति प्राप्त करने के लिये पाँच रुपए प्रति पृष्ठ फोटोकापी के देने होंगे। लोक सूचना अधिकारी यदि जानकारी नहीं देता है तो उसे 250 रुपये अर्थदंड देना पड़ता है। इस कानून के आ जाने से भ्रष्टाचार पर कुछ हद तक अंकुश लगा है।

सुधा रानी तैलंग
अजयगढ़ पन्ना (मध्य प्रदेश)

PENCIL ART WORK

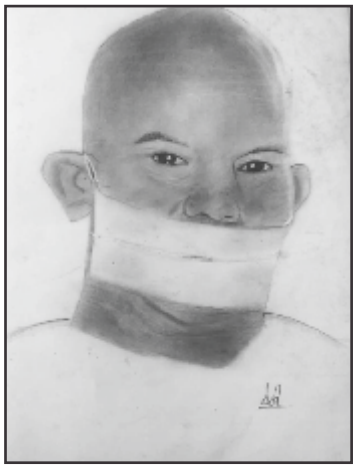

श्रेष्ठ ढुगड़, उम्र 13 वर्ष, कोलकाता

काव्यांशी जैन, कक्षा 12, उदयपुर

रचना सोनी, कक्षा 12, उदयपुर

अक्षय, कक्षा 9, बीकानेर

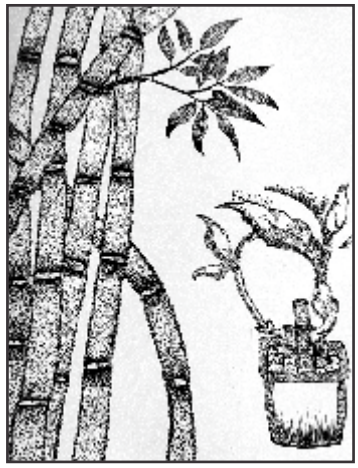

प्रिशा चौखड़ा, कक्षा 8, थाणे

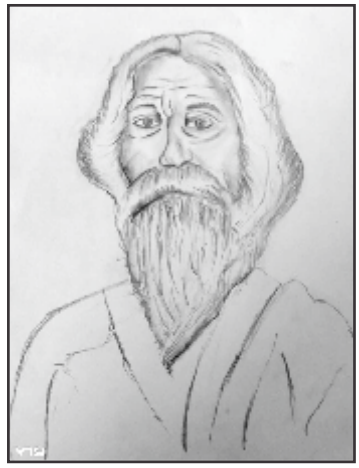

भूवि महनोत, उम्र 12 वर्ष, नई दिल्ली

आरोही माहेश्वरी, कक्षा 5, चित्तौड़गढ़

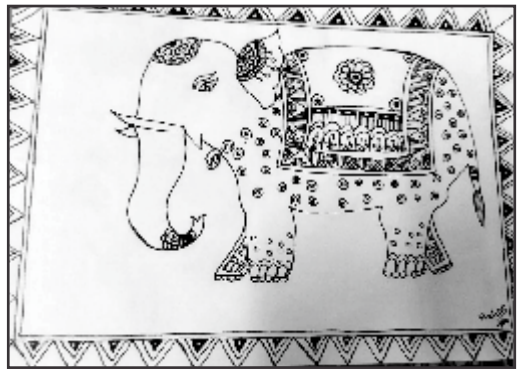

महक प्रज्ञा बोथरा, कक्षा 9, दिल्ली

रक्षाबंधन का त्यौहार

भाई बहन के प्यार का
है ये त्यौहार निराला।
नेह मेह के पुष्पों से,
गूँथी नातों की माला।

रोली चन्दन का टीका,
माथे पर है सजाती।
भाई को राखी बाँधे,
बहना मिठाई खिलाती।

थाल आरती का लेकर,
बहना आरती उतारे।
खुशियाँ लेकर धरती पर,
उतरे हैं चन्दा तारे।

रक्षा का वचन निभाऊँ
जब कहता प्यारा भैया।
माँ इन भाई–बहनों की
ले लेती लाख बलैया।

भैया लाया चॉकलेट,
सुन्दर उपहार सलोना।
खुश होकर झूम रही है,
मस्ती में प्यारी सोना।

गीता गुप्ता 'मन'
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

गुड्डा–गुड्डी हैं तैयार।
हँसते–गाते करते प्यार।।

पहने नई–नई पोशाक।
खूब जमाते दोनों धाक।।

रोली चन्दन अगर कपूर।
मीठे लड्डू मोतीचूर।।

राखी बाँधे गुड्डी आज।
गुड्डा का है जैसे राज।।

भाई–बहना हैं खुशहाल।
बदल गई है इनकी चाल।।

रक्षाबंधन का त्यौहार।
आए जीवन में सौ बार।।

डॉ. अवधेश कुमार अवध
मेघालय

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

फूलपुर का आर्केस्ट्रा

गड़बड़! फिर गड़बड़! नहीं, यह धुन भी नहीं जमी। न तितलियों के पंख थिरके और न घोघों ने सूँड हिलाई। दूर से आए टिड्डों ने भी संगीत कार्यक्रम के बारे में निराश स्वर में कहा– ''अब फूलपुर के आर्केस्ट्रा में वो बात नहीं रही।'' सचमुच में उनका संगीत पहले जैसा नहीं रहा था। यह बात स्वयं आर्केस्ट्रा दल के नायक ड्रम मास्टर टिल्लू मेढक ने भी महसूस की थी। फूलपुर का आर्केस्ट्रा, वह आर्केस्ट्रा था जिसकी धुन पर फूलपुर के पशु–पक्षी खिलखिला उठते थे और रात भर के थके जुगनूं भी ताजगी महसूस करने लगते थे।

तीन सौ नन्हे कीट प्राणियों वाला यह विशाल आर्केस्ट्रा प्रातःकाल जब तान छेड़ता था तब चारों ओर एक दूसरा नजारा होता था। सब फुरती और उत्साह से अपने–अपने कामों में जुट जाते थे और आलस्य का कहीं नामोनिशान नहीं रहता था। टिल्लू मेढक के इस आर्केस्ट्रा की धुन सारे जंगल प्रदेश में थी और दूर–दूर से लोग इसे सुनने आते थे। इसमें फूलपुर को अच्छी आय होती थी। इसलिए आर्केस्ट्रा पर फूलपुर के लोगों को गर्व होना उचित ही था। ऐसा आर्केस्ट्रा अचानक ही बेसुरा हो जाए। हर राग टूटने लगे। वाद्यों में ताल न रहे, पर गलती का पता भी न चले तो हैरानी की ही बात थी। टिल्लू मेढक की परेशानी का सचमुच कोई छोर न था।

यूँ देखने में कोई खराबी नजर नहीं आती थी। सभी झींगुर और मच्छर गिटार बजाने में उस्ताद थे। अतः उन पर शक किया भी नहीं जा सकता था। बत्तख और मुर्गियाँ पहले की ही तरह ढोल पीटती थी। सभी चूहे बिगुलों को बखूबी फूँक रहे थे। मछलियाँ जलतरंग पर प्रवीणता से पहले की ही तरह कूदती थी। तोतों और कबूतरों पर भी सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं थी। इनके अलावा दूसरे जीव भी अपना–अपना कार्य पूरी मुस्तैदी से कर रहे थे। इसलिए सन्देह करें तो किस पर? और किसी पर भी सन्देह करें तो आर्केस्ट्रा का खात्मा पक्का। अतः टिल्लू मेढक ने चुपचाप सभी कलाकारों पर नजर रखनी शुरू कर दी। इस निगरानी का परिणाम भी सामने आने लगा। कुछ परिणाम तो बड़े ही सनसनीखेज निकले।

दरअसल, फूलपुर आर्केस्ट्रा दल का हर कलाकार किसी न किसी दूसरे धंधे में फँसा था और अपना ज्यादातर वक्त और ध्यान उन धंधों में लगाता था। जैसे मुर्गियाँ और बत्तखें अपना अधिकतर समय अंडे सेने में लगा रही थी, जिसके कारण उन्हें संगीत के अभ्यास का समय नहीं मिल पा रहा था। झींगुरों को जब मौका मिलता तभी सो लेते थे। चूहें गलत अफवाह के शिकार थे कि संगीत से हमेशा गुजारा नहीं चल सकता। इसलिए उनका इधर–उधर से चोरी करके सामान इकट्ठा करने में ज्यादा ध्यान था। कबूतर और तोते दूसरे पक्षियों के लिए किराए पर घोंसलें बना रहे थे और इनके अलावा दूसरे कीट भी इसी तरह कुछ न कुछ कर रहे थे। लेकिन मच्छर जो कर रहे थे वह सबसे खतरनाक था। टिल्लू मेढक की तो आँख खुली रह गई उनकी कहानी जानकर।

मच्छरों को दुष्ट खटमलों ने डरा–बहका दिया था कि जल्द ही फूलपुर का आर्केस्ट्रा टूटने वाला है और आर्केस्ट्रा के बन्द होते ही फूलपुर में फूल खिलने बन्द हो जाएँगे, जिससे उनके सामने भोजन की समस्या उठ खड़ी होगी। सो उन्हें अभी से खून पीने की आदत डाल लेनी चाहिए।

आर्केस्ट्रा दल के सभी मच्छर दुष्ट खटमलों के बहकावे में आकर फूलों का रस छोड़कर मनुष्य तथा दूसरे पशुओं का खून पीने लगे थे। जिसके कारण दिन भर उन्हें नींद आती रहती और दिनों–दिन वे आलसी होते जा रहे थे। टिल्लू मेढक की नजर में आर्केस्ट्रा के सुरों के बिगड़ने का यही सबसे बड़ा कारण था। अतः अगले दिन ही उसने सभी मच्छरों को बुलाया और पूछा कि– ''क्या सचमुच तुम्हें रक्तपान अच्छा लग रहा है?''

''नहीं, कतई नहीं''। सभी मच्छर एक साथ बोले। ''हम सिर्फ़ आदत डाल रहे हैं।'' ''तुम्हें यह आदत डालने की कोई जरूरत नहीं। दुष्ट खटमलों की बात मानकर खराब आदत डालना कोई अच्छी बात नहीं है।''

टिल्लू मेढक मच्छरों को समझाते हुए बोला– ''इस दुनिया से फूलों का खिलना कभी खत्म नहीं हो सकता। पर हाँ, संगीत उन्हें जल्दी जरूर खिला सकता है अतः सारी चिन्ताएँ छोड़कर तुम्हें संगीत पर ध्यान देना चाहिए।

इसके बाद टिल्लू ने दूसरे कलाकारों को भी समझाया कि संगीत से वे इतना सम्मान और धन प्राप्त कर सकते हैं कि उनका जीवन आराम से कट जाए। सचमुच टिल्लू की बात पते की थी, जिसका नतीजा तुरन्त सामने आया। फूलपुर के आर्केस्ट्रा में एक बार फिर से ताजगी आ गई। आर्केस्ट्रा की नई–नई धुनों से फूलपुर का आकाश फिर से गूँजने लगा। लोगों की भीड़ दूर–दूर से फूलपुर की ओर उमड़ने लगी। सबने दिल से टिल्लू मेढक का लोहा मान लिया और इन नन्हे जीवों के प्रकृति के साथ तालमेल ने फूलपुर के वातावरण को और सुन्दर बना दिया।

समीर गांगुली
मुम्बई (महाराष्ट्र)

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है,
इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ–नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

					1	2	3	
1	2	3			8		4	
8		4			7	6	5	
7	6	5						
						1	2	3
	1	2	3			8		4
	8		4			7	6	5
	7	6	5					

उत्तर इसी अंक में

व्हाट्सएप कहानी

एक आदमी ने एक पेंटर को बुलाया। अपना घर और अपनी नाव दिखाकर कहा कि– ''इसको पेंट कर दो।'' वह पेंटर पेंट लेकर आया और उस नाव को पेंट कर दिया जैसा कि नाव का मालिक चाहता था। फिर पेंटर ने अपने पैसे लिए और चला गया।

अगले दिन, पेंटर के घर पर वह नाव का मालिक पहुँच गया और उसने पेंटर को एक बहुत बड़ी धनराशि का चेक दिया। पेंटर भौंचक्का हो गया और पूछा– '' इतने पैसे ये किस बात के हैं? मेरे पैसे तो आपने कल ही दे दिये था।'' मालिक ने कहा– ''ये पेंट का पैसा नहीं है, बल्कि ये उस नाव में जो "छेद" था, उसको रिपेयर करने का पैसा है।'' पेंटर ने कहा– ''अरे साहब! वो तो एक छोटा सा छेद था, सो मैंने बन्द कर दिया था। उस छोटे से छेद के लिए इतना पैसा मुझे ठीक नहीं लग रहा है।''

मालिक ने कहा– ''दोस्त, तुम समझे नहीं मेरी बात। अच्छा में विस्तार से समझाता हूँ। जब मैंने तुम्हें पेंट के लिए कहा तो जल्दबाजी में तुम्हें ये बताना भूल गया कि नाव में एक छेद है उसको रिपेयर कर देना और जब पेंट सूख गया, तो मेरे दोनों बच्चे उस नाव को समुद्र में लेकर सैर के लिए निकल गए। मैं उस वक़्त घर पर नहीं था, लेकिन जब लौटकर आया और अपनी पत्नी से ये सुना कि बच्चे नाव को लेकर गए हैं। तो मैं बदहवास हो गया। क्योंकि मुझे याद आया कि नाव में तो छेद है।

मैं गिरता पड़ता भागा उस तरफ, जिधर मेरे प्यारे बच्चे गए थे। लेकिन थोड़ी दूर पर मुझे मेरे बच्चे दिख गए, जो सकुशल वापस आ रहे थे। अब मेरी खुशी और प्रसन्नता का आलम तुम समझ सकते हो। फिर मैंने छेद चेक किया, तो पता चला कि, मुझे बिना बताये तुम उसको रिपेयर कर चुके हो। तो मेरे दोस्त उस महान कार्य के लिए तो ये पैसे भी बहुत थोड़े हैं। मेरी औकात नहीं कि उस कार्य के बदले तुम्हें ठीक से पैसे दे पाऊँ। जीवन में भलाई का कार्य जब मौका लगे हमेशा कर देना चाहिए। भले ही वह बहुत छोटा सा कार्य ही क्यों न हो, क्योंकि कभी–कभी वह छोटा सा कार्य भी किसी के लिए अमूल्य हो सकता है।'' यह सुनकर पेंटर ने सज्जन की भावना का सम्मान करते हुए वह चेक रख लिया।

चित्र पहेली

③

बालक और बालिका के असली चेहरे बताओ।

चाँद मोहम्मद घोसी
मेड़ता सिटी (राजस्थान)

ईश्वरपुर

जहाँ घर-घर में हैं वाद्य यंत्र और संगीतज्ञ

दोस्तो! बिहार का गया जिला एक विख्यात तीर्थ स्थान है जहाँ विष्णुपद मन्दिर है। आपने यह भी सुना होगा कि लोग यहाँ अपने पूर्वजों को मोक्ष दिलाने के लिए पिंडदान हेतु भी जाते हैं लेकिन आज हम आपको बता रहे हैं यहाँ के एक विशेष गाँव ईश्वरपुर के बारे में जहाँ के लगभग हर घर में एक संगीतज्ञ जरूर है।

कई प्रसिद्ध संगीतज्ञों की जन्मभूमि

देश में गीत और संगीत को लेकर विशिष्ट पहचान बनाने वाले कई कलाकारों की यह जन्मभूमि है। यहाँ के सितार वादक स्व. बलराम पाठक को सितार-ए-हिन्द के खिताब से नवाजा गया। विश्व प्रसिद्ध ठुमरी गायक स्व. कामेश्वर पाठक इसी गाँव के थे। इनके अलावा स्व. बलदेव उपाध्याय, स्व. रामजी उपाध्याय प्रसिद्ध पखावज वादक, स्व. सुदिन पाठक, कृष्ण मोहन पाठक प्रसिद्ध ध्रुपद गायक, स्व. श्रीकात पाठक ठुमरी सह ख्याल गायक, स्व. जयमंगल पाठक प्रसिद्ध तबला वादक, स्व. जयराम तिवारी विश्व प्रसिद्ध ठुमरी गायक इसी गाँव के रहे हैं जिनकी पहचान पूरे देश में है।

घर-घर से निकलते संगीत के सुर

तबला, सितार आदि वाद्य यंत्रों से सरगम पैदा करने वाला है यह गाँव। गया का यह गाँव नक्सल प्रभावित इलाका होने के बावजूद संगीत की दुनिया में चमक रहा है। यहाँ आप आएँगे तो ऐसा लगेगा कि संगीत की एक अनूठी दुनिया में आ गए हैं। इस गाँव में जगह-जगह आपको वाद्य यंत्रों की मधुर आवाज सुनने को मिलेगी। इस अद्भुत नजारे को देख कोई भी दंग रह जाता है। बिहार के

इस गाँव में घर-घर में तबला, हारमोनियम, सितार, गिटार बजाने वाले वादक हैं। गाँव के लोग तबला, हारमोनियम, सितार, गिटार, ध्रुपद धमाल, गायकी, ठुमरी, तालपुरा, पखावज वादन, सितार वादन, ढोल वादन, ख्याल गायकी, पखावज में माहिर हैं। यहाँ इस तरह की विरासत करीब 100 सालों से कायम है।

विदेशों में भी दिखा रहे हैं जलवा

इस गाँव के लोग देश ही नहीं बल्कि अमेरिका, थाईलैंड सहित कई देशों में अपना जौहर मनवा चुके हैं। कई तो संगीत के माध्यम से अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा कर विदेश में ही बस गए। यहाँ के निवासी विनय पाठक अमेरिका के कैलिफोर्निया में म्यूजिक कंपोजर के पद पर काम कर रहे हैं। वहीं अशोक पाठक थाईलैंड में सितार वादन में अपना और अपने गाँव का नाम बढ़ा रहे हैं। ये पिछले कई वर्षों से थाईलैंड में ही रह रहे हैं। वहीं दिल्ली में रविशंकर उपाध्याय संगीत नाटक अकादमी से जुड़े हैं। यहाँ के रहने वाले मनीष कुमार पाठक को भी राज्य सरकार द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

शिखर चन्द जैन
कोलकाता (प. बंगाल)

सूअरु ने खेली गेंद

अभी तक सुबह हुई नहीं थी। लेकिन सूअरु की हुसहुस शुरू हो गयी। इधर मुँह घुसा...वहाँ सूँघ ले। यहाँ लात मार, उधर लेट जा। सूअरु की इस हुसहुस से उसके भाई–बहनों में भी हिलना–डुलना शुरू हो गया। मम्मी सूअर गुस्सा हुई। "फुर्रेफूक" करते हुए मम्मी ने सूअरु को ज़ोर से आवाज दी।

मम्मी की आवाज सुनते ही, गर्दन झुकाकर सूअरु तेजी से दौड़कर आया। मम्मी ने जल्दी से उसे गोद में ले लिया। लेकिन सूअरु ने मम्मी को सिर के बल ऐसी ठोकर मारी कि मम्मी और सूअरु एक साथ कीचड़ में एक दूसरे पर लेट गये। सूअरु को प्यार से लप्पड़ मारते हुए मम्मी ने कहा– "ये क्या किया? मैं तो गिर गयी ना!" कान थिरकाते हुए सूअरु बुदबुदाया– "मम्मी कल से मेरे पेट में दर्द हो रहा है।" मम्मी बोली– "कल अच्छी, ताजी–ताजी गन्दगी ना खाकर, तू तो गया था उस कूड़े के ढेर पर। वहाँ बासी खाना खाया होगा। उसी से तकलीफ हुई होगी। मेरे सूअरु–फूअरु, मैंने तुझे हजार बार कहा है, उन इनसानों से एक बात सीखनी चाहिए कि, 'ताजा–ताजा खाओ, बासी–वासी फेंक दो' समझे।" सूअरु तिलमिलाता हुआ बोला– "ओ मेरी मैयो, खाना खाकर नहीं, पिटाई होने के कारण मेरा पेट दर्द कर रहा है। कल मैं सामने वाले घर में गया था तो उस इनसान ने मेरी डंडे से पिटाई की थी ना मम्मी।" यह सुनते ही सूअरु की मम्मी गुस्सा हो गयी। उसे उस इनसान पर बहुत गुस्सा आया।

सूअरु के पेट पर बड़े ही प्यार से और धीरे–धीरे अपनी नाक रगड़ते हुए मम्मी ने कहा– "इन

पढ़े–लिखे इनसानों को छोटे–बड़े का कोई लिहाज ही नहीं है। छोटे बच्चों को डंडे से नहीं पीटना चाहिए, यह क्या हम सूअरों को इन इनसानों को सीखना चाहिए अब?" सूअरु के भाई–बहन बोले– "मम्मी–मम्मी, उस इनसान के बच्चे जब अपने कूड़े के ढेर पर आएँगे तो हम उन्हें कीचड़ में गिरा देंगे। उन्हें धपाधप–धपाधप घूसें–लातें मारेंगे। उनके बदन पर गन्दगी फेकेंगे।" मम्मी सूअर गुस्से से बोली– "नहीं! नहीं!! हमें इनसानों की तरह बर्ताव नहीं करना है। हम सूअर हैं! सूअर!! हम छोटे बच्चों को कभी नहीं पिटते। किसी को भी यों ही लात नहीं मारते। किसी को भी कभी–भी परेशान नहीं करते। हम किसी के भी बीच में, पचड़े में नहीं पड़ते।"

सूअरु का छोटा भाई पूँछ लहराते हुए बोला– "मतलब हम सूअर उन बुरे इनसानों से अच्छे हैं ना! हम... हम सभी के दोस्त हैं ना!" मम्मी ने छोटे सूअरु को सहलाते हुए कहा– "हाँ मेरे प्यारे सूअरु! अरे, इनसान तो सिर्फ घर में रहते हैं। हम तो पूरे गाँव में रहते हैं। इनसान तो सिर्फ अपने घर को साफ़ रखते हैं। हम पूरे गाँव को साफ़ रखते हैं। इनसानों के खाने–पीने के हजारों नखरे होते हैं। यह चाहिए, वह नहीं चाहिए, यह खाओ, वह फेंको। घर को कूड़े का ढेर बना डालते हैं ये। देखो तो, हमारे कोई भी नखरे नहीं होते। जो मिले उसे हम प्यार से, खुशी से खा लेते हैं। हम पूरे गाँव में घूमते हैं। कूड़े के ढेर में पड़ी चीजें खाते हैं। मजे से रहते हैं।"

"हाँ, हाँ, इसीलिए तो हम लोग कहते हैं ना कि जो स्वाद से खाएगा, वही सूअर होगा।" सूअरु के भाई की यह बात सुनकर मम्मी खुश हो गयी। मम्मी ने उसे प्यार से अपनी ओर खींचा और बड़ी ममता से उसका बायाँ कान चाट लिया। तभी सूअरु के पापा मुँह में कोई–सी घास लेकर तुडू–तुडू आए। मम्मी ने फुस्स–फूस करके उसे सूँघा। फिर उसे चबा–चबाकर सूअरु को खिलाया।

मुँह टेढ़ा–मेढ़ा करते हुए सूअरु उस घास को खाने की कोशिश करने लगा। जैसे–तैसे उसे निगलने लगा। लेकिन वह उसे निगल ही नहीं पा रहा था। मम्मी का ध्यान नहीं है यह देखकर सूअरु मुँह में घूमने वाली घास को बाहर थूकनेवाला था। लेकिन सामने ही पूँछ हिलाते हुए पापा खड़े थे। आँखें छोटी करके वे उसी को देख रहे थे। फिर सूअरु ने भाई की पीठ पर हाथ रखते हुए गर्दन ऊँची करके, वह घास जैसे–तैसे निगल डाली। सूअरु की नाक से अपनी नाक सटाते हुए मम्मी ने मुँह हिलाकर उसे शाबाशी दी। सूअरु ने खुशी–खुशी पूँछ हिलायी। मम्मी ठंडे–ठंडे, मुलायम और फिसलन भरे कीचड़ में फैल गयी। सूअरु मम्मी के पेट पर गर्दन रखकर चुपचाप पड़ा रहा। थोड़ी देर बाद, सूअरु के पेट का दर्द थोड़ा कम हुआ।

सूअरु को अच्छा लगने लगा। सूअरु उठा। उसने हाथ–पैर खोलकर आलस झटका। वह रास्ते के छोर पर यों ही इधर–उधर पूँछ लहराते हुए घूमने लगा। तभी अचानक उसकी बगल में 'धप्प' आवाज सुनायी दी। उसने डरकर देखा। सूअरु को मारनेवाले इनसान के बेटे की गेंद सूअरु की बगल में गिरी थी। वह लड़का आँगन में खड़े रहकर सूअरु की ओर देख रहा था। उस लड़के ने सूअरु की ओर देखकर प्यार से हाथ हिलाया। सूअरु ने भी उस लड़के की ओर देखकर अपनी पूँछ हिलायी।

फिर सूअरु ने गेंद को एक ही जोरदार लप्पड़ मार दिया। गेंद ऊँची उछली और उस लड़के के आँगन में ही जा गिरी। लड़के ने खुशी से तालियाँ पीटी। हाथ हिलाकर दोस्त को शाबाशी दी। उस लड़के ने फिर से अपने दोस्त की ओर गेंद फेंकी और सूअरु ने अपने दोस्त की ओर फिर से गेंद उछाली। सूअरु और वह लड़का अब रोज ही यह खेल खेलने लगे।

अपने बच्चों को इस तरह खेलता हुआ देखकर सूअरु की मम्मी और सूअरु के दोस्त की मम्मी को बहुत खुशी मिलती थी और मजे की बात यह कि अपने बच्चों का खेल देखते–देखते वे दोनों भी सहेलियाँ बन गयीं।

मराठी मूल लेखक : श्री राजीव तांबे
अनुवाद : डॉ. विशाखा ठाकूर
ठाणे (महाराष्ट्र)

पानी में खेल का रोमांच

स्कूबा डाइविंग और स्नॉर्केलिंग

भारत में स्कूबा डाइविंग और स्नॉर्केलिंग तेजी से एक लोकप्रिय साहसिक खेल के रूप में पहचान बना रहा है। समुद्री जीवन में उपलब्ध विभिन्न प्रकार की चीजों की सुन्दरता लोगों को

अपनी ओर खींचती हैं। स्कूबा डाइविंग और स्नॉर्कलिंग निश्चित रूप से भारत के पानी के नीचे की दुनिया के उत्साह और रोमांच को महसूस करने का सबसे अच्छा तरीका है। भारत के तटों और समुद्र तटों का साफ पानी भी डाइविंग और स्नॉर्कलिंग के लिए आकर्षण जागृत करता है। भारत में स्कूबा डाइविंग और स्नॉर्केलिंग के लिए पर्याप्त अवसर हैं। ऐसे कई गंतव्य हैं जिन्हें अब तक नहीं देखा गया है और कुछ बहुत लोकप्रिय भी हैं।

भारतीय समुद्र तट का विशाल क्षेत्र भारत में स्नॉर्केलिंग के लिए अच्छे विकल्प प्रदान करता है जिसका पर्यटक अपनी छुट्टियों के दौरान अनुभव कर सकते हैं। हजारों किलोमीटर तक फैली भारतीय तटरेखा में हिन्द महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी का शक्तिशाली जल है जो भारत में स्नॉर्केलिंग के लिए महान अवसर प्रदान करता है। भारत में ऐसे कई स्थान हैं जहाँ समुद्र तट पर चट्टानों के किनारे, मैंग्रोव, जैसे द्वीप, मैंग्रोव और समुद्री जीवन, और कई स्नॉर्केलिंग सम्भावनाएँ हैं।

मछली पकड़ना

यह गतिविधि भारतीय उपमहाद्वीप के लिए विशेष रूप से अनुकूल हैं क्योंकि कई नदियाँ विशाल गंगा के मैदानों से होकर गुजरती हैं और सुन्दर हिमालय पर्वत की ऊपरी पहुँच में भी उत्पन्न होती हैं। कई नदियों और उनकी सहायक नदियों का स्वच्छ और तेज पानी मछली पकड़ने के लिए शानदार स्थान प्रदान करता है। मछली पकड़ने के लिए साहसिक स्थान महान हिमालय पर्वत से लेकर बर्फ से लदी जलधाराओं और ऊँचाई वाली झीलों तक और अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के विस्तृत तटीय हिस्सों तक है।

भारत में पैरासेलिंग

पैरासेलिंग, भारत में लोकप्रिय एक मनोरंजक गतिविधि है। इसमें एक व्यक्ति को एक वाहन (आमतौर पर एक नाव) के पीछे खींचा

जाता है, जबकि एक विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए कैनोपी विंग से जुड़ा होता है जो एक पैराशूट की याद दिलाता है, जिसे पैरासेल विंग के रूप में जाना जाता है। पैरासेन्डर का पैराशूट पर बहुत कम या कोई नियंत्रण नहीं होता है। गतिविधि मुख्य रूप से साहसिक प्रेमियों और पर्यटकों के लिए एक मजेदार सवारी है।

अनिल जायसवाल
नई दिल्ली

कौन थी मोनालिसा?

यूँ तो विश्व में अनेक पेंटिंग्स हैं लेकिन जो बात मोनालिसा की पेंटिंग में है, वह भला दूसरों में कहाँ? इस पेंटिंग ने चित्रकार लियोनार्डो द विंची को विश्वव्यापी प्रसिद्धि दिलवाई।

24 वर्षीय मोनालिसा का पति फ्रांसिस्को देल गिओकोंदो था। लियोनार्डो ने मोनालिसा का चित्र उस समय बनाना शुरू किया था जब वे 51 वर्ष के थे। मोनालिसा हर रोज उनके स्टूडियो में आती थी। तीन साल के कठिन परिश्रम के बाद जब चित्र बनकर तैयार हुआ तो उसे देख कलाकार स्वयं मंत्रमुग्ध हो गया।

चित्र में मोनालिसा के चेहरे से एक बहुत ही गूढ मुस्कान झलकती है जिसे देख कोई भी व्यक्ति आश्चर्यचकित हो जाता है। वास्तव में उसकी आँखों की मोहकता के कारण चित्र को बार–बार देखने को मन करता है। यही कारण है कि लियोनार्डो ने सदैव उसे अपने पास रखना चाहा। जब–जब मोनालिसा के पति ने उनसे चित्र माँगा, उन्होंने हर बार यह कहकर बात टाल दी कि चित्र अभी पूरा नहीं हुआ है।

लियोनार्डो जहाँ भी गए, मोनालिसा के चित्र को अपने साथ ले गए। उन्होंने 1516 में इटली छोड़ दी तथा फ्रांस चले गए। फ्रांस के राजा फ्रांसिस प्रथम ने लियोनार्डो को रहने के लिए एक आलीशान महल तथा मोनालिसा के चित्र के लिए 4000 गोल्ड क्राउन भी दिए। लेकिन इस चित्र पर राजा फ्रांसिस का अधिकार लियोनार्डो की मृत्यु के बाद ही हो सका।

मोनालिसा का चित्र आमतौर पर फ्रांस में ही राजा महाराजाओं के अधिकार क्षेत्र में ही रहा है। सन् 1800 में यह चित्र नेपोलियन बोनापार्ट के पास था और उनके शयनकक्ष में टंगा रहता था। वर्तमान में यह पेंटिंग फ्रांस के लूब्र नामक संग्रहालय में टंगी हुई है। विगत 500 सालों में यह चित्र केवल दो बार ही फ्रांस के बाहर गया। पहली बार 1911 में इसे संग्रहालय से चुरा लिया गया था जिसे इटली से बरामद कर लिया था। दूसरी बार यह 26 दिन के लिए तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति जान एफ. केनेडी के पास अतिथि के रूप में रहा।

मोनालिसा का चित्र एक अमूल्य विश्व धरोहर है और आज भी उसका आकर्षण और मुस्कान कायम है। सन् 1503 और 1506 के दौरान इटली के चित्रकार लियोनार्डो द विंची ने मोनालिसा का चित्र पेंट किया था। आज भी लोग इस चित्र को देखकर मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।

8 जनवरी 1962 के दिन लियोनार्डो द विंची की बनाई मशहूर पेंटिंग मोनालिसा की अमेरिका में पहली प्रदर्शनी लगाई गई थी। वाशिंगटन की नेशनल गैलरी ऑफ आर्ट में लगाई गई इस प्रदर्शनी में पहले दिन विशिष्ट लोगों को प्रवेश दिया गया। इसे देखने तत्कालीन राष्ट्रपति जॉन एफ. केनेडी सहित 2000 से अधिक सम्माननीय नागरिक पहुँचे थे। अगले दिन से इसे आम लोगों के लिए खोला गया। तीन दिन में इसे 5 लाख से अधिक लोगों ने देखा। इसके बाद इसे न्यूयॉर्क ले जाया गया। यहाँ भी इसे देखने 10 लाख से अधिक लोग पहुँचे थे।

डॉ. विनोद गुप्ता
मन्दसौर (मध्यप्रदेश)

देशभक्ति की परिभाषा

महीनों बाद पीहू अपने माता पिता के साथ अपने गाँव में आई थी। कोरोना महामारी के चलते कई महीनों से ट्रेन बन्द थी। इसलिए पीहू अपने माता पिता के साथ मुम्बई में ही रहने को मजबूर थी।

गाँव के घर में आते ही पीहू चहकने लगी। इतना बड़ा खुला–खुला सा घर। घर में खूब सारे लोग। दादा–दादी, चाचा–चाची और उनके दो बच्चे। पीहू की खुशी का ठिकाना नहीं था। गाँव में सब लोग शाम को जल्दी ही खाना खा लेते थे। पीहू ने पेट भर कर स्वादिष्ट खाना खाया और दौड़कर अपने दादाजी की गोद में आकर बैठ गई। चाचा के दोनों बच्चे भोलू और गीता भी उसके पीछे–पीछे दादाजी की चारपाई पर आकर बैठ गए।

पीहू जब भी गाँव में आती, रात को दादाजी से एक कहानी जरूर सुनती। यह उसका प्रिय काम था। दादाजी कभी राजा रानी की कहानी सुनाते, कभी विक्रम बेताल की। सभी कहानियाँ और किस्से रोचक होते और उनमें कोई सीख छुपी होती। इस बार बच्चों ने राजा की कहानी सुनाने की ज़िद की।

कहानी सुनाने से पहले दादाजी ने बच्चों के सामने एक शर्त रखी। कहानी के दौरान पूछे गए सवाल का उत्तर मिलने पर ही कहानी पूरी करेंगे। जब तक उत्तर नहीं मिलेगा कहानी अधूरी रहेगी। बच्चों ने शर्त मान ली। कहानी शुरू हुई। एक बहुत ही दयालु राजा थे। वह स्वयं को देश से बाद में रखते थे। उनके राज्य में प्रजा बहुत खुश थी। राजा की लम्बी आयु और उनके सुशासन के लिए प्रतिदिन भगवान से सभी प्रजाजन प्रार्थना करते थे। राजा के मंत्रिमंडल में भी अधिकतर लोग राजा से सन्तुष्ट थे फिर भी कुछ लोग मौका मिलने पर राजा की बुराई भी किया करते थे। एक व्यक्ति राजा का प्रबल विरोधी था। वह हमेशा ही राजा की कमियों की चर्चा करता रहता था।

परन्तु राजा एक सहृदय व्यक्ति थे। अपनी प्रजा एवम् सहयोगियों से उनका एक समान प्रेम था। विरोधियों को भी वह उचित सम्मान देते थे। एक दिन अचानक उनके विदेश मन्त्री बीमार हो गए। उचित इलाज से वो ठीक तो हो गए किन्तु अपनी वृद्ध अवस्था के कारण उन्होंने मन्त्री पद से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने राजा से प्रार्थना की कि वो अपना बचा हुआ जीवन एक सामान्य नागरिक की भाँति व्यतीत करना चाहते हैं। राजा ने उनकी इच्छा का मान रखते हुए, भारी मन से उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया। परन्तु अब उसके सामने चुनौती थी कि उनके जैसा बुद्धिमान एवम् दूरदर्शी विदेश मन्त्री कैसे चुना जाए?

राजा ने सभी योग्य नागरिकों से आवेदन पत्र आमंत्रित किए। उसने स्वयं ही सभी आवेदन पत्रों को पढ़ने का निश्चय किया। सभी आवेदन पत्रों को पढ़ने के बाद उसकी नजर अन्तिम आवेदन पत्र पर पड़ी जो उसका प्रबल आलोचक का था। इतनी कहानी सुनाकर दादाजी रुक गए। उन्होंने बच्चों से प्रश्न किया– "बताओ बच्चो! राजा ने अपना विदेश मन्त्री किसे चुना?"

राजा ने सभी योग्य नागरिकों से आवेदन पत्र आमंत्रित किए। उसने स्वयं ही सभी आवेदन पत्रों को पढ़ने का निश्चय किया। सभी आवेदन पत्रों को पढ़ने के बाद उसकी नजर अन्तिम आवेदन पत्र पर पड़ी जो उसका प्रबल आलोचक का था। इतनी कहानी सुनाकर दादाजी रुक गए। उन्होंने बच्चों से प्रश्न किया– "बताओ बच्चो! राजा ने अपना विदेश मन्त्री किसे चुना?"

बच्चों ने अपना अपना दिमाग लगाया। गीता ने कहा– ''सभी योग्य थे, किसी को भी बनाया होगा।'' भोलू के अनुसार राजा ने यह विभाग अपने पास ही रख लिया होगा। पीहू को बहुत सोचने पर भी कोई उत्तर नहीं सूझा इसलिए उसने दादाजी से ही सही उत्तर बताने की प्रार्थना की। गीता और भोलू ने भी उसकी बात का समर्थन किया।

बच्चों की बात मानते हुए दादाजी ने आगे कहानी सुनाना शुरू किया। "बच्चो, तुम विश्वास नहीं करोगे किन्तु राजा ने अपने प्रबल आलोचक को अपने देश का विदेश मन्त्री नियुक्त किया।" दादाजी की बात सुनकर बच्चे आश्चर्यचकित थे। उन्होंने उत्सुकता दिखाते हुए पूछा– "लेकिन राजा ने ऐसा क्यूँ किया दादाजी?" दादाजी मुस्कुराए फिर बोले– "क्योंकि राजा सच्चा देशभक्त था।" बच्चों की समझ में अब भी नहीं आया था। उन्होंने फिर से प्रश्न किया– "अपने आलोचक को विदेश मन्त्री बना देने से राजा देशभक्त कैसे हो गया दादाजी?"

इस बार दादाजी ने थोड़ा सरल करके समझाया। "देखो बच्चो, राजा जानता था कि उसका आलोचक अपना पूरा ध्यान देश की सुरक्षा में लगाएगा क्योंकि उसे राजा को खुश करने में कोई रुचि नहीं थी। राजा ने स्वयं को पीछे रखकर देश के बारे में सोचा। क्योंकि राजा सच्चा देशभक्त था।" बच्चों की समझ में अब पूरी बात आ गई थी। उन्हें कहानी बहुत पसन्द आई। दादाजी के प्रश्न ने कहानी को और भी रोचक बना दिया था। आज उन्होंने देशभक्ति की नई परिभाषा सीखी। पीहू बहुत ही खुश थी। इतने महीनों बाद इतनी अच्छी कहानी उसने सुनी थी।

अर्चना त्यागी
जोधपुर (राजस्थान)

अमीरी का मापदंड

विश्व विख्यात इंफोसिस के मालिक नारायण मूर्ति का विवाह सुधा मूर्ति से हुआ। विवाह के बाद उन्हें एक अमीर व्यक्ति ने भोज पर बुलाया। सुधा एक शिक्षित मगर सामान्य परिवार से थी। उन्हें किसी धनी व्यक्ति के यहाँ जाने का यह पहला अवसर था। दोनों भोज पर गए। वहाँ चाँदी की थाली, चम्मच व बर्तनों में शानदार तरीके से भोजन परोसा गया। दोनों जब लौटकर घर आए तो सुधा मूर्ति ने अपने पति से कहा– ''आप उन्हें अमीर मानते हो, मुझे तो वे बहुत गरीब लगे।'' सुधा की यह बात सुनकर नारायणमूर्ति ने चकित होकर पूछा–''तुम ऐसा कैसे कह सकती हो?'' तब सुधा ने जवाब दिया– ''क्योंकि उनके ड्राइंग रूम में सब कुछ था मगर एक भी किताब नहीं थी।''

पढ़ो और जानो

इन प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में हैं, आपको उन्हें ढूँढ़ना है।

1. 'याद..... की आती है, ऊर्जा नवीन दे जाती है।' में रिक्त स्थान में उपयुक्त शब्द भरें।
2. 'फूलपुर का आर्केस्ट्रा' कहानी का संदेश क्या है ?
3. राज धनेश पक्षी किन राज्यों का राज्य पक्षी है ?
4. राष्ट्रीय समर स्मारक में कितने शहीदों के नाम खुदे हुए हैं?
5. महाप्रज्ञ की कथा 'दोनों चाहिये' में किन दो बातों की ओर संकेत किया गया है?
6. आप विद्यालय की सफाई में किस प्रकार सहयोग करते हैं?
7. किस अधिकार के आने से भ्रष्टाचार पर अंकुश लगा है?
8. 'सुअरु ने खेली गेंद' कहानी में गेंद की क्या भूमिका है?
9. मोनालिसा पेन्टिंग की रचना किसने की ?
10. इस अंक के साथ 'बच्चों का देश' अपने प्रकाशन के कौन से वर्ष में प्रवेश कर रहा है ?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) अब्राहम लिंकन (ब) कार्ल मार्क्स (स) विस्टन चर्चिल (द) अल्फ्रेड नोबेल (2) जार्ज वाशिंगटन (3) प्लेटो (4) वास्को द गामा (5) नेपोलियन बोनापार्ट (6) मार्टिन लूथर किंग (7) माओ त्से तुंग (8) वाल्ट डिज्नी (9) ऐनीबेसेन्ट (10) हास्य अभिनेता

अन्तर ढूँढ़िए

(1) लड़के के हाथ में फुटबॉल का रंग अलग (2) फूल का आकार बड़ा (3) झोपड़ी का एक रोशनदान गायब (4) लड़की की फ्रॉक का रंग अलग (5) एक फुटबॉल अतिरिक्त (6) लड़के का एक हाथ गायब (7) कुत्ता अतिरिक्त (8) फुटबॉल का आकार बड़ा

दिमागी कसरत

(1) पलक (2) सड़क (3) विनायक (4) नमक (5) कबूतर (6) कम्बल (7) कनक (8) कर्नाटक

बूझो तो जानें

(1) भगत सिंह (2) चन्द्रशेखर आजाद (3) मंगल पांडे (4) सुभाष चन्द्र बोस (5) लक्ष्मी बाई

चित्र पहेली

बालक का चेहरा 2 नम्बर व बालिका का 8 नम्बर

वर्ग पहेली

1 गौ	2 त	म	3 ऋ	षि		4 मै	5 दा
6 ना	प		षि		7 ह	थि	नी
	न		8 सु	खी		ली	
9 कि		10 शा	न		11 के	श	12 व
13 स	त्य		14 क	15 वि		16 र	क्त
मि		17 वै		18 रा	19 व	ण	
20 स	21 ह	सा		22 स	र		23 भा
	24 रा	खी		25 त	क	दी	र

सुडोकू

6	5	7	9	4	1	2	3	8
1	2	3	6	5	8	9	4	7
8	9	4	2	3	7	6	5	1
7	6	5	1	2	3	4	8	9
2	3	1	8	9	4	5	7	6
9	4	8	7	6	5	1	2	3
5	1	2	3	7	6	8	9	4
3	8	9	4	1	2	7	6	5
4	7	6	5	8	9	3	1	2

जाह्नवी भदानी, कक्षा 9, बीकानेर

अदिति चौखड़ा, कक्षा 9, अहमदाबाद (गुजरात)

जयशंकर, कक्षा 6, बीकानेर

आयशा लोहिया, कक्षा 7, राजसमन्द

ओजस्वी, कक्षा 6, गौरीगंज (उत्तर प्रदेश)

दृष्टि माहेश्वरी, कक्षा के.जी., चित्तौड़गढ़

आप भी अपनी **कलम और कूँची** का कमाल
हमें मोबाइल नं. 9351552651 पर या
पत्रिका के पते पर भेजें।

हमारा तिरंगा

तिरंगा हमारी आन बान शान है।
तिरंगा भारत की पहचान है।।
भाईचारे के साथ आज,
तिरंगा हम फहराएँगे।।
भारत का नाम ऊँचा करके,
भारत को सर्वश्रेष्ठ बनाएँगे।।
हर घर पर तिरंगा फहराना है।
इसे झुकने से हमें बचाना है।।
पावन स्वतन्त्रता दिवस पर,
वीर जवानों को याद करना है।।
आजादी के अमृत महोत्सव पर,
हर घर तिरंगा लहराना है।।

अर्चित जैन
कक्षा 7, उदयपुर

विश्व हाथी दिवस : 12 अगस्त

अंजली, दीपिका, दिव्या, रानी

शिवानी कुमावत

दीया कुमावत

लक्ष्मी संध्या, राधा

दिव्या भील

सोनिया, बबली

कोमल

भाग्यश्री वैष्णव, मनीषा

टीना पांडिया

वंदना कुमावत

वंशिका कुमावत

मैना भील

: सामग्री सौजन्य :
आई. आई. एफ़. एल. फाउंडेशन द्वारा गांवों में संचालित सखियों की बाड़ी केंद्र, ब्लॉक- चित्तौड़गढ़

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

माँ की याद में बेटे ने बनवाया ताजमहल

तमिलनाडु के तिरुवारुर जिले में अमरुद्दीन शेख दाऊद के नाम के व्यक्ति ने अपनी माँ की याद में 5.5 करोड़ रुपए खर्च कर ताजमहल जैसी इमारत निर्मित करवाई है। साल 2020 में अमरुद्दीन ने माँ जेलानी बीवी को बीमारी के कारण खो दिया था। अमरुद्दीन के अनुसार उसकी माँ शक्ति और प्रेम का प्रतीक थी। मेरी माँ ने हम बच्चों के पालन के लिए बहुत संघर्ष किया। उन्होंने हमारे पिता की भी भूमिका निभाई।

इंडोनेशिया का रेनबो विलेज

इंडोनेशिया के जावा द्वीप के मध्य में स्थित कम्पुंग पेलंगी गाँव हर किसी का ध्यान आकर्षित करता है। कम्पुंग पैलंगी का शाब्दिक अर्थ है इंद्रधनुषी गाँव। कैंडी रंग का वंडरलैंड एक विस्मयकारी स्थल है। सड़के रंग बिरंगी है और घर पहाड़ी तक फैले हुए हैं, जो इंद्रधनुष से कम नहीं दिखते। इस गाँव को रंग बिरंगा बनाने का श्रेय एक शिक्षक को है। सभी के सहयोग से इस गाँव को इंद्रधनुष के रंगों में रंगा गया है। 232 घरों वाले इस गाँव के कई मकानों पर कई तरह की कलात्मक तस्वीरें बनाई गई है।

सबसे ऊँची चोटी पर सबसे कम उम्र की पर्वतारोही

महाराष्ट्र के ठाणे की 5 वर्षीय प्रिशा ने अपने पर्वतारोही पिता लोकेश निकजू के साथ 5364 मीटर (17598 फीट) की ऊँचाई वाले बेस कैंप तक पहुँचकर उसने एवरेस्ट की चढ़ाई का नया रेकॉर्ड कायम कर दिया। वह दुनिया की सबसे ऊँची पर्वत चोटी पर पहुँचने वाली सबसे कम उम्र की पर्वतारोही बन गई है। प्रिशा ने यह उपलब्धि हासिल करने के लिए 12 दिन में 130 किमी की दूरी तय की।

नारियल व जूट से बनाई 16 फीट ऊँची प्रतिमा

मध्य प्रदेश के सिवनी में स्थानीय कलाकार विक्की कश्यप व उनकी टीम ने कई दिनों की मेहनत के बाद हजारों नारियल के खाली खोखों और जूट से भोलेनाथ की विशाल प्रतिमा तैयार की है। ऐतिहासिक व प्रसिद्ध मठ मन्दिर में सोलह फीट ऊँची यह प्रतिमा आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है।

आइसलैंड दुनिया का सबसे शान्तिपूर्ण देश

दुनिया के सबसे शान्त देश होने का खिताब एक बार फिर से आइसलैंड को मिला है। यह देश 2008 को शीर्ष स्थान पर बना हुआ है। इसके बाद डेनमार्क और आयरलैंड का स्थान है। ग्लोबल पीस इंडेक्स-2023 के अनुसार सबसे शान्तिपूर्ण देशों की रैंकिंग में यूरोप और एशिया का दबदबा हैं। भारत को 126 वाँ स्थान मिला। यह इंडेक्स घरेलू और अंतरराष्ट्रीय संघर्षों, सामाजिक सुरक्षा और सैन्यीकरण समेत 23 मापदंडों के आधार पर 163 देशों के मूल्यांकन के बाद जारी की जाती है।

कौतुक ऐप को अकादमी पुरस्कार

केन्द्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ने हिंदी के लिए युवा पुरस्कार अतुल कुमार के उपन्यास चांदपुर की चंदा को, बाल साहित्य के लिए सूर्यनाथ सिंह की पुस्तक कौतुक ऐप को दिया है। अँग्रेजी में सुधा मूर्ति की पुस्तक ग्रैंडपैरेंट्स बैग ऑफ स्टोरिज भी पुरस्कृत हुई।

Flying Car

Ever wanted a flying car? Well X Peng, a chinese car company, is making flying cars with 8 propellers.

A problem is that if you throw a can from the sky it can hit someone and can injure them or kill them and for that there is a death penalty too. Another problem is that it required a lot of electricity to climb high places and land. These cars are hard to drive in bad weather because what if a strong gust of wind came and no one even knew. What if lighting zapped your car.

Some flying cars don't even need license like Tesla. It is ultra lightweight which means you don't need a license. Also there can be no passengers on board meaning only one person can be on board. So its system is made only by wires that's why in Tesla flying cars there are only two joysticks.

Also flying cars need to be approved by the FAA. Also the First flying car was model A. And flying cars are almost 300,000 dollars. Their price tags are crazy. Thank you all for reading this.

Johna Bhandari

Class 2nd grade, 7 years of age.

Solon,Ohio

हिन्दी नाम – राज धनेश
अँग्रेजी नाम – Great Hornbill
वैज्ञानिक नाम – Buceros bicornis

अरुणाचल प्रदेश एवं केरल का राज्य पक्षी : राज धनेश

यह भारत के साथ ही नेपाल, भूटान, म्यांमार, बांग्लादेश, मलाया, सुमात्रा आदि में पाया जाता है। पेड़ों पर रहने वाला यह एक बड़ा पक्षी है। इसकी लम्बाई 120 से 130 सेन्टीमीटर तक होती है। यह मुख्य रूप से काले–सफेद रंग का पक्षी है। इसका सिर, शरीर के ऊपर का भाग और उड़ने वाले पंख काले होते हैं। इसका सीना भी काला होता है, किन्तु गला तथा सीने का ऊपरी भाग और पेट के नीचे का भाग पीलापन लिए हुए सफेद होता है। इसकी चोंच लम्बी, भारी, टेढ़ी और पीली होती है। इसके सिर पर पीले रंग का शिरस्त्राण होता है।

यह फल एवं बेरियाँ आदि बड़े रोचक ढंग से खाता है। पहले यह फल को चोंच से तोड़ता है और फिर उसे हवा में उछालकर क्रिकेट की गेंद की तरह कैच करके निगल जाता है। यह विभिन्न प्रकार के कीड़े–मकोड़े, चूहे, छिपकली, गिरगिट आदि जीवों का शिकार भी करता है। यह प्रायः जोड़े में रहता है।

डॉ. कैलाश चन्द सैनी
जयपुर (राजस्थान)

अमर गीत

मत बाँटो इनसान को

मंदिर–मस्जिद–गिरिजाघर ने
बाँट लिया इनसान को।
धरती बाँटी, सागर बाँटा
मत बाँटो इनसान को।

अभी राह तो शुरू हुई है
मंजिल बैठी दूर है।
उजियाला महलों में बंदी
हर दीपक मजबूर है।

मिला न सूरज का संदेशा
हर घाटी मैदान को।
धरती बाँटी, सागर बाँटा
मत बाँटो इनसान को।

अब भी हरी भरी धरती है
ऊपर नील वितान है।
पर न प्यार हो तो जग सूना
जलता रेगिस्तान है।

अभी प्यार का जल देना है
हर प्यासी चट्टान को।
धरती बाँटी, सागर बाँटा
मत बाँटों इनसान को।

साथ उठें सब तो पहरा हो
सूरज का हर द्वार पर।
हर उदास आँगन का हक़ हो
खिलती हुई बहार पर।

रौंद न पाएगा फिर कोई
मौसम की मुस्कान को।
धरती बाँटी, सागर बाँटा
मत बाँटो इनसान को।

विनय महाजन

साथ

चित्रकथा-

संकेत गोस्वामी, जयपुर (राज.)

First letter

Look at the pictures and say their names. Match each of them with the first letter given in the box.

A

T

B

S

Colour the hats as suggested.

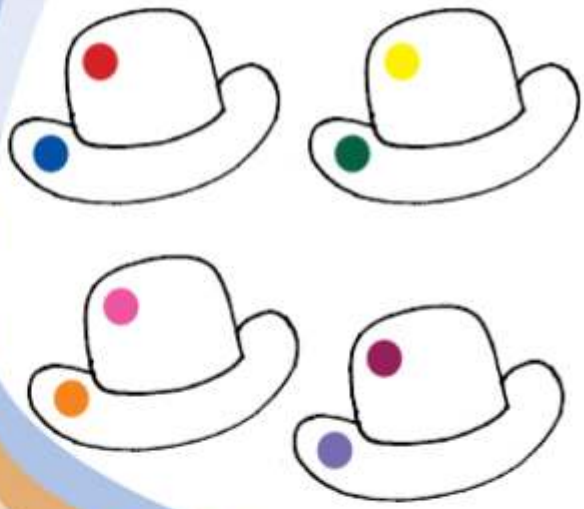

Match the parts

Each of the five pictures are divided into two. One part is in the first row and the other part in the second row. Match the parts by drawing lines.

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

AkashGanga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom,
Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur,
New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai
Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

हार्दिक शुभकामनायें

''बच्चों का देश'' राष्ट्रीय बाल मासिक से जुड़े नन्हे पाठकों, लेखकों और शुभचिंतकों के देशभर में फैले आत्मीय परिवार को पत्रिका की 25वीं वर्षगाँठ के शुभ अवसर पर हार्दिक बधाइयाँ और शुभकामनाएँ! यह हम सब के लिए गौरव के क्षण हैं। 24 वर्ष पूर्व नई पीढ़ी के नव निर्माण के सपने को साकार और व्यापक स्वरूप में देखना निश्चय ही गर्व की अनुभूति देने वाला है। यह वर्ष बच्चों की इस लोकप्रिय पत्रिका के प्रकाशन का 25वां वर्ष है। यहाँ तक पहुँचने में आप सब के आत्मीय सहयोग के प्रति सम्पूर्ण अणुविभा परिवार कृतज्ञता का अनुभव करता है।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण का आशीर्वाद अणुव्रत आन्दोलन और अणुव्रत कार्यकर्ताओं की गतिशीलता का ऊर्जस्व स्रोत है। वर्तमान वर्ष अणुव्रत आन्दोलन का भी हीरक जयंती वर्ष है जिसे ''अणुव्रत अमृत महोत्सव'' के रूप में देश–विदेश में मनाया जा रहा है। आचार्य श्री तुलसी द्वारा सन 1949 में प्रवर्तित इस आन्दोलन की 75 वर्षों की यह सुदीर्घ यात्रा उपलब्धियों से भरी रही है। अणुव्रत का मानवतावादी दर्शन बिना किसी जाति, धर्म या वर्ग के भेदभाव के जन–जन में नैतिकता, सद्भावना, अहिंसा, नशामुक्ति, पर्यावरण और संयम का सन्देश देता है।

सन 2018 से ''बच्चों का देश'' पत्रिका के नियमित प्रकाशन की जिम्मेदारी अणुविभा के कन्धों पर है। इससे पूर्व भागीरथी सेवा प्रन्यास, जयपुर द्वारा अनेक संघर्षों के बाद भी इस पत्रिका का गतिमान रखा गया था। इसके संरक्षक और अणुविभा के संस्थापक आदरणीय मोहनभाई की रचनात्मक सोच का ही यह परिणाम है कि अणुविभा आज अनेक बालोपयोगी प्रकल्पों का सफल संचालन कर रही है। ''बच्चों का देश'' इनमें अपना प्रमुख स्थान रखती है। इस पत्रिका की गौरवशाली यात्रा में मोहनभाई और उनके परिवार – श्री पंचशील जैन, स्वर्गीय कल्पना जैन और वर्तमान संपादक श्री संचय जैन की सेवाएँ निश्चय ही उल्लेखनीय रही हैं।

''बच्चों का देश'' के सफल प्रकाशन में लम्बे समय से संपादकीय दायित्व सम्भाल रहे श्री संचय जैन व श्री प्रकाश तातेड़, सहयोगी टीम चंद्रशेखर देराश्री व गजेंद्र दाहिमा के साथ–साथ समस्त लेखकगण, चित्रकार व स्तम्भकार के प्रति हम अहोभाव व्यक्त करते हुए पत्रिका के शुभ भविष्य की मंगलकामना करते हैं। देशभर में सक्रिय अणुव्रत समितियाँ व उनके कार्यकर्ता भी पत्रिका के प्रसार में उनके समर्पित सहयोग के लिए साधुवाद के पात्र हैं।

एक बार पुनः अनंत शुभकामनाओं के साथ,

विनम्र,

अविनाश नाहर
अध्यक्ष

भीखम सुराणा
महामंत्री

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुविभा

अगस्त, 2023

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

प्रकाशन के रजत जयंती वर्ष में प्रवेश

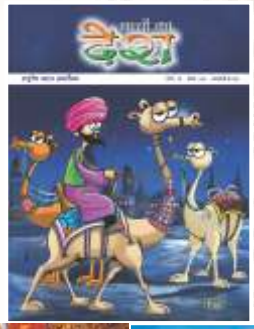

बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक